आकाश गंगा

वर्ष: प्रथम अंक: प्रथम अवधि: अप्रैल-सितंबर, 2025

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)
अध्यक्षता : भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण,
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज
उत्तरप्रदेश-211012

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)
अध्यक्षता : भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण,
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज

आकाश गंगा

अंक : 1

अवधि: अप्रैल-सितंबर, 2025

संरक्षक

श्री वेंकटेश्वर एल.

कार्यपालक निदेशक/प्रधानाचार्य,

एवं अध्यक्ष, नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)

मार्गदर्शन

श्री विकास मिश्रा,

संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

श्री ओम प्रकाश खरवार

सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव, नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)

सह-संपादक

श्री प्रमथेश शर्मा

वरिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा)

"आकाश गंगा" पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से सहमति एवं रचनाओं की मौलिकता हेतु नराकास, प्रयागराज (उपक्रम) का सहमत या उत्तरदायी होना आवश्यक नहीं है।

आकाश गंगा

वर्ष : 1 अंक : 1 अवधि : अप्रैल-सितंबर, 2025

शुभकामना संदेश

अध्यक्ष महोदय का संदेश
महाप्रबंधक (एटीएम) का संदेश
महाप्रबंधक (संचार) का संदेश
मार्गदर्शक का संदेश
संपादकीय – सदस्य सचिव, नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)

विषय–सूची

क्रम	विषय	लेखक
1	राजभाषा विभाग की 50 वर्ष की गौरवशाली यात्रा : उपलब्धियां और भविष्य की दिशा	श्री ओम प्रकाश खरवार
2	आस्था, परंपरा, संस्कृति और साहित्य का संगम – शहर प्रयागराज	श्री ओम प्रकाश खरवार
3	आजादी के 79 वर्ष की उपलब्धियां और विकसित भारत की ओर बढ़ते कदम	श्री चेतन शर्मा
4	भारत में सहकारिता का इतिहास , विकास की संभावनाएँ और चुनौतियाँ	श्री अरेन्द्र मौर्य
5	नीलगगन का सजग वो प्रहरी	श्री भव्य जैन
6	"वियोग के दिन"	श्री गौरव गोयल
7	ए ए आई का संकल्प	श्री मोहम्मद नाजिश
8	मेरा NAeL परिवार	श्री राम गोपाल
9	कौशाम्बी - प्राचीनता और श्रद्धा का संगम	श्री आनंद उपाध्याय
10	मेरी गोवा यात्रा	श्री विनीत कुमार
11	प्रतिनिधि रचनाएँ : **थोड़ी धरती पाऊँ**	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
12	प्रतिनिधि रचनाएँ : **किसान**	सत्यनारायण लाल
13	प्रतिनिधि रचनाएँ : **जी होता, चिड़िया बन जाऊँ!**	सोहनलाल द्विवेदी
14	प्रतिनिधि रचनाएँ : **जलाते चलो**	द्वारिका प्रसाद
15	पिकबैनी	श्री सत्यन कुमार
16	राजभाषा क्या है ?- जाने सरल शब्दों में।	राजभाषा अनुभाग, सीएटीसी
17	राजभाषा प्रश्नोत्तरी	राजभाषा अनुभाग, सीएटीसी
18	**भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण : एक परिचय**	राजभाषा अनुभाग, सीएटीसी
19	**सदस्य कार्यालयों की सूची**	राजभाषा अनुभाग, सीएटीसी

श्री वेंकटेश्वर एल,
कार्यपालक निदेशक/प्रधानाचार्य,
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण,
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, प्रयागराज
एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)

Shri Venkateshwar L
Executive Director/Principal,
Airports Authority of India
Civil Aviation Training College, Prayagraj
And
Chairman, TOLIC,Prayagraj (Undertaking)

अध्यक्ष महोदय का संदेश

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
ISO9001:2015 CERTIFIED

अध्यक्ष महोदय का संदेश

यह बड़े ही गर्व की बात है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) की अध्यक्षता, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज के पास है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण संघ की राजभाषा नीति के प्रचार-प्रसार हेतु पूर्णरूप से प्रतिबद्ध है और इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए नराकास, प्रयागराज (उपक्रम) की ई-पत्रिका **"आकाशगंगा"** के प्रथम अंक का प्रकाशन सितंबर, 2025 में इस कार्यालय द्वारा किया जा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूरी उम्मीद है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित होगा। **"आकाशगंगा"** पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं इस कार्यालय के राजभाषा अनुभाग को हार्दिक बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ देता हूँ जिनके कठिन परिश्रम से इस शानदार, रोचक एवं ज्ञानवर्धक पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका।

(श्री वेंकटेश्वर एल.)
कार्यपालक निदेशक/प्रधानाचार्य एवं
अध्यक्ष, नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)

नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज
बमरौली, प्रयागराज -211012
CIVIL AVIATION TRAINING COLLEGE
BAMRAULI, PRAYAGRAJ-211012
ई-मेल/E-mail: edcatc@aai.aero
दूरभाष/ Phone: 0532-2580435
फैक्स/ FAX: 0532-2580441

श्री वी. मुरुगानन्दम,
महाप्रबंधक (संचार),
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण,
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, प्रयागराज

Shri V. Muruganandam,
General Manager (CNS),
Airports Authority of India,
Civil Aviation Training College, Prayagraj

महाप्रबंधक (संचार) महोदय का संदेश

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA

ICAO TRAINAIR PLUS FULL MEMBER ISO9001:2015 CERTIFIED

संदेश

सर्वप्रथम, मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज के पास नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) की अध्यक्षता है। यह बड़े ही गर्व का विषय है कि यह कार्यालय भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा गठित एक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का अध्यक्ष कार्यालय है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) की अध्यक्षता के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रति अपनी समर्पण भाव को दर्शाते हुए नराकास, प्रयागराज (उपक्रम) की ई-पत्रिका "आकाशगंगा" के प्रथम अंक का प्रकाशन अपने-आप में एक बड़ा कार्य है।

इस शुभ अवसर पर इस कार्यालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा प्रकाशित की जाने वाली इस पत्रिका की सफलता हेतु राजभाषा अनुभाग, सीएटीसी, प्रयागराज को मैं अपनी शुभकामनाएँ एवं ढेरों बधाइयाँ देता हूँ।

वी. मुरुगानन्दम
(वी. मुरुगानन्दम)
महाप्रबंधक (संचार)

नगर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज
बमरौली प्रयगराज –211012
CIVIL AVIATION TRAINING COLLEGE
BAMRAULI, PRAYAGRAJ-211012.
दूरभाष @PHONE:0532-2580435
QSD1/FAX: 0532- 2580441
E-mail:edcatc@aai.aero

श्री के.वी.एस.एस.एच. राव,
महाप्रबंधक (एटीएम),
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण,
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, प्रयागराज

Shri K. V. S.S. H. Rao,
General Manager (ATM),
Airports Authority of India,
Civil Aviation Training College, Prayagraj

महाप्रबंधक (वायु यातायात प्रबंधन) महोदय का संदेश

संदेश

यह बड़े ही हर्ष की बात है कि भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज के पास नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) की अध्यक्षता है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता करना बड़े ही सम्मान की बात होती है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हिन्दी संघ की राजभाषा है और राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना, हिन्दी में कार्यालयीन कामकाज करना तथा राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देना हम सभी का संवैधानिक दायित्व ही नहीं बल्कि एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते नैतिक कर्तव्य भी है।

अतः नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) की पत्रिका आकाशगंगा के प्रथम अंक के प्रकाशन की सफलता की शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे आशा है यह पत्रिका हम सभी के ज्ञान में बढ़ोतरी का माध्यम बनेगी। इस अवसर पर मैं, इस कार्यालय के राजभाषा अनुभाग को पत्रिका के प्रकाशन हेतु उनकी लगन और अथक प्रयासों को रेखांकित करते हुए उन्हें ढेरों बधाइयाँ देता हूँ।

(श्री के.वी.एस.एस.एच. राव)
महाप्रबंधक (एटीएम)

श्री विकास मिश्रा,
संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन),
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण,
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज

संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन) महोदय का संदेश

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
ISO9001:2015 CERTIFIED

संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन) महोदय का संदेश

हिन्दी महज हमारे देश की राजभाषा ही नहीं है बल्कि इस देश अधिकांश नागरिकों के आम बोलचाल और पढ़ने-लिखने की भाषा भी है। भारतीय संविधान में राजभाषा हिन्दी का व्यापक वर्णन है। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना अधिक से अधिक योगदान दें। हिन्दी एक सहज, सरल और मीठी भाषा है और इसे सीखना बहुत ही आसान है।

इस कार्यालय के पास नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) की अध्यक्षता वर्ष 2019 से है।नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) धीरे-धीरे अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रति अपनी प्रतिबद्धिता को नया आयाम देते हुए इस कार्यालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा नराकास, प्रयागराज (उपक्रम) हेतु प्रकाशित की जा रही ई-पत्रिका "आकाशगंगा" की सफलता की मैं दिल से कामना करता हूँ।

एक पत्रिका का प्रकाशन करना बड़ा ही कठिन काम है तथा इसमें लगातार मेहनत और एकाग्रता की आवश्यकता होती है। इस कार्यालय के राजभाषा अनुभाग के समर्पण एवं कठोर मेहनत को मैं साधुवाद देता हूँ जिनके प्रयासों के कारण इस ज्ञानवर्धक पत्रिका का संभव हो सका है।

(श्री विकास मिश्रा)
संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

नागर विमानन प्रशिक्षण कालेज
बमरौली, प्रयागराज -211012
CIVIL AVIATION TRAINING COLLEGE
BAMRAULI, PRAYAGRAJ-211012
ई–मेल/E-mail: edcatc@aai.aero
दूरभाष/ Phone: 0532-2580435
फैक्स/ FAX: 0532-2580441

संपादकीय

भारत विविधताओं से भरा देश है जहां सदियों से विभिन्न संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ एक साथ फल-फूल रही हैं। एकता, अखंडता, समानता एवं विश्वबंधुत्त्व भारतीय जनजीवन का आधार है।

देश की आजादी के बाद, जब भारतीय संविधान ने हिन्दी भाषा को राजभाषा के रूप में दिनांक 14.09.1949 को अंगीकार किया, तब भी यह निर्णय देश की एकता, अखंडता और भाषायी विविधता को ध्यान में रखते हुए लिया गया था।

हिन्दी महज एक भाषा नहीं बल्कि यह एक भाव एवं विचार है। यह देशप्रेम की भाषा है। यह स्वतन्त्रता संग्राम की भाषा है। इस प्रकार हिन्दी सम्पूर्ण भारत के लिए जनसंपर्क और जनसंचार की भी भाषा है। अगर हम रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में कहें तो "भारत की सभी भाषाएँ नदियां हैं तो हिन्दी महानदी है"।

अर्थात हिन्दी भारत की सभी भाषाओं की संगिनी है और यह संविधान में वर्णित सभी भाषाओं के साथ मिलकर आगे बढ़ने वाली भाषा है। हिन्दी भाषा के शब्दों भंडार का विकास संविधान में वर्णित सभी भाषाओं पर आधारित है। अतः हिन्दी प्रेम की भाषा है और इसका कार्यान्वयन तथा विकास प्रेरणा, प्रोत्साहन, बंधुत्व और आपसी सहअस्तित्व पर आधारित है। यह लोकतांत्रिक मूल्यों को सींचने वाली भाषा है।

देश की आजादी के 78 वर्ष बाद भी हिन्दी सम्पूर्ण भारत के किसी भी भूभाग पर थोपी नहीं गई है बल्कि भाषायी एकता और अखंडता को ध्यान में रखते हुए इसके कार्यान्वयन के सद्भावनापूर्ण प्रयास लगातार किए जा रहे हैं।

इस प्रकार हिन्दी भाषा देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा है। अतः विभिन्न बातों को परे रखते हुए राजभाषा हिन्दी में कामकाज करना हम सभी न सिर्फ संवैधानिक कर्तव्य है बल्कि यह हमारा नैतिक कर्तव्य भी है तथा यह हमारे राष्ट्रप्रेम को भी परिलक्षित करता है।

मुझे आशा है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम) का यह प्रथम प्रयास आप सभी को सुंदर अनुभूति का अहसास कराएगा।

ओम प्रकाश

(ओम प्रकाश खरवार)

सहायक प्रबंधक (राजभाषा एवं सदस्य सचिव,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)

लेख

राजभाषा विभाग की 50 वर्ष की गौरवशाली यात्रा :उपलब्धियां और भविष्य की दिशा

ओम प्रकाश खरवार
सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव , नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

पृष्ठभूमि

जब हम राजभाषा की बात करते हैं तब निश्चित रूप से हमारे मन में भाषा की बात आती है। भाषा के बिना राजभाषा अधूरा है। अर्थात बिना भाषा के राजभाषा की हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। भाषा विचारों एवं भावनाओं को व्यक्त करने का सबसे बेहतर एवं प्रभावी माध्यम है। भाषा किसी भी देश की सांस्कृतिक धरोहर होती है। भाषा ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक तथ्यों एवं सामाजिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं को अभिव्यक्त करने का सबसे सशक्त साधन भी होती है। इस प्रकार, भाषा के विकास का इतिहास स्वयं ही मानव सभ्यता के क्रमिक विकास का इतिहास है।

भारतवर्ष का इतिहास अपने आप में सम्पूर्ण मानव सभ्यता का इतिहास है। प्राचीनकाल से ही भारत में विभिन्न संप्रदायों, धर्मों, भाषा-भाषियों, खान-पान, रंग-रूप, वेश-भूषा धारण करने वाले लोग शांतिपूर्ण तरीके से रह रहे हैं जो भारत की सच्ची सांस्कृतिक परंपरा को प्रतिबिंबित करता है तथा एक समावेशी देश का चित्र प्रस्तुत करता है। भारत विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों, साहित्यों, कलाओं, भाषाओं इत्यादि की जन्मभूमि है। अतः भारत अनेकता में एकता को अभिव्यक्त करता हुआ एक बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक, बहुधर्मी आस्थाओं वाला देश है।

भारत प्राचीनकाल, मध्यकाल से लेकर आधुनिककाल तक विभिन्न आक्रमणकारियों का शिकार रहा तथा विदेशी शासकों के अधीन रहा। अंततः सदियों के युद्धों एवं संघर्षों के पश्चात वर्ष 1947 में भारत को आजादी मिली। यही खास वजह है कि स्वतन्त्रता आंदोलन में निर्णायक भूमिका निभाने वाले नेताओं तथा हमारे देश के संविधान निर्माताओं ने देश की आजादी के बाद संविधान के माध्यम से "**सामासिक संस्कृति वाले देश**" के निर्माण की संकल्पना रखी थी।

देश की आजादी के लिए उत्तर-दक्षिण से लेकर पूर्व-पश्चिम तक के क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। सम्पूर्ण भारत के इन क्रांतिकारियों, आंदोलनकारियों एवं आम नागरिकों के बीच संपर्क की भाषा हिन्दी थी। इस प्रकार हिन्दी ने आजादी के आंदोलन में सभी भारतीय भाषाओं में सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसलिए, संविधान निर्माताओं ने विस्तृत एवं गहन चर्चा के बाद हिन्दी को राजभाषा के रूप में अंगीकार करने का सर्वसम्मत निर्णय लिया।

संक्षेप में कहें तो, हिन्दी सिर्फ एक भाषा ही नहीं वरन यह एक भाव, भावना एवं विचार है। वस्तुतः हिन्दी भारत की आत्मा है। यह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। यह स्वतन्त्रता आंदोलन की मुख्य भाषा है। जिस प्रकार संस्कृत अधिकांश भारतीय भाषाओं की जननी है ठीक उसी प्रकार से हिन्दी सभी भारतीय भाषाओं की बहन है। यह सम्पूर्ण भारत की संपर्क एवं जनसम्पर्क की भाषा है एवं वैश्विक स्तर पर भी इसके प्रयोग, अध्ययन एवं अध्यापन में भी लगातार बढ़ोतरी हो रही है। यह भारत के गौरवशाली इतिहास एवं संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली भाषा है। यह सरस, सरल एवं

सुंदर भाषा है। हिन्दी, बोलचाल, पढ़ने-लिखने एवं समझने की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा है इसलिए यह देश की राजभाषा है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि विश्व के सभी देशों की अपनी-अपनी राजभाषा है। उदाहरण के लिए, जापान में जैपनीज़, जर्मनी में जर्मन, फ़्रांस में फ्रेंच, ब्रिटेन में इंग्लिश और चीन में चाइनिज इत्यादि। ठीक उसी प्रकार से भारत की भी अपनी राजभाषा है।

राजभाषा का सरल शब्दों में अर्थ है राजकाज की भाषा अर्थात सरकारी कामकाज की भाषा। जिस भाषा में किसी देश के प्रशासन एवं जनहित से जुड़े सभी कार्य किए जाते हों उस भाषा को राजभाषा कहते हैं। इस प्रकार, यह किसी देश या राज्य के शासन एवं प्रशासन की भाषा होती है।

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात हमारे देश को सुचारु रूप से चलाने के लिए हमारी अपनी राजभाषा की आवश्यकता थी। प्राचीन भारत की राजभाषा संस्कृत एवं पाली आदि हुआ करती थी। मध्यकालीन भारत की राजभाषा अरबी, फारसी एवं उर्दू थी। ब्रिटिशकालीन भारत की राजभाषा अँग्रेजी थी। देश की आजादी के बाद स्वदेशी भाषा में प्रशासन की आवश्यकता महसूस की गई। अतः स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेताओं के नेतृत्व में संविधान निर्माण के लिए एक संविधान सभा गठित की गई थी। संविधान सभा के सामने सवाल यह था कि किस भाषा को भारत की राजभाषा बनाया जाए।

भारत के स्वतंत्रता का आंदोलन सिर्फ आजादी पाने की ही लड़ाई नहीं थी बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक और भाषायी विविधता की अस्मिता को बचाने का भी एक बड़ा आंदोलन था और हिन्दी ने इस आंदोलन का नेतृत्त्व किया क्योंकि हिन्दी पूरे देश में समझी जाने वाली भाषा थी तथा हिन्दी की पहुँच पूरे देश भर में थी और यह शेष भारत के नागरिकों के लिए संपर्क भाषा का काम कर रही थी।

संविधान सभा में तीन दिन (12 से 14 सितंबर, 1949 तक) की लंबी बहस के बाद हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया। अतः दिनांक 14 सितंबर 1949 को हिन्दी संघ की राजभाषा बनी परिणामतः तथा इसके उपलक्ष में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि ब्रिटिश शासनकाल के दौरान देश का सारा कामकाज अंग्रेज़ी भाषा में होता था। अतः व्यावहारिक रूप से अचानक देश का सारा प्रशासनिक कामकाज हिन्दी में कर पाना आसान नहीं था। इसलिए भारत सरकार ने प्रशासनिक सुविधा को देखते हुए भारतीय संविधान के लागू होने की तिथि से 15 वर्षों तक हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेज़ी का प्रयोग जारी रखने का निर्णय लिया।

इस प्रकार 26 जनवरी, 1965 से सम्पूर्ण देश का सरकारी कामकाज केवल हिन्दी में किया जाना तय था लेकिन सन 1965 की तय समय सीमा के पूरे होने से पहले ही देश के विभिन्न भागों में भाषायी विवाद शुरू हो गया। अतः सरकार ने हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेज़ी का प्रयोग इस मामले में सर्वसम्मति प्राप्त होने तक करने संबंधी विधेयक संसद में पारित किया जिसे राजभाषा अधिनयम, 1963 के नाम से जाना गया। संक्षेप में कहें तो संघ की राजभाषा नीति की स्थिति द्विभाषिक है। जिसमें हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेज़ी का प्रयोग चलता रहेगा लेकिन हिन्दी को प्राथमिकता देना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है।

राजभाषा विभाग का गठन, अधीनस्थ कार्यालय एवं उनके कार्य

भारत में सरकारी कामकाज में राजभाषा की द्विभाषिक स्थिति को देखते हुए तथा राजभाषा संबंधी सांविधानिक और कानूनी उपबंधों का उचित अनुपालन सुनिश्चित करने और संघ के सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गृह मंत्रालय के एक स्वतंत्र विभाग के रूप में जून, 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई थी। राजभाषा विभाग, गृह मंत्री, भारत सरकार के अधीन कार्य करता है तथा उनकी सहायता के लिए गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार, सचिव (राजभाषा) एवं संयुक्त सचिव (राजभाषा) सहित अनेकों कार्मिक कार्य करते हैं जिनके माध्यम से राजभाषा विभाग के सभी दैनिक कामकाज संपन्न होते हैं। राजभाषा विभाग अपने सभी कार्य विभिन्न अधीनस्थ कार्यालयों जैसे केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, संसदीय राजभाषा समिति के माध्यम से संपन्न करता है।

अतः वर्ष 1975 से ही यह विभाग संघ के सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रगामी प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। भारत सरकार (कार्य आबंटन) नियम, 1961 के अनुसार, राजभाषा विभाग को निम्न कार्य सौंपे गए हैं :-

1. संविधान में राजभाषा से संबंधित उपबंधों तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) के उपबंधों का कार्यान्वयन, उन उपबंधों को छोड़कर जिनका कार्यान्वयन किसी अन्य विभाग को सौंपा गया है।
2. किसी राज्य के उच्च न्यायालय की कार्यवाही में अंग्रेजी भाषा से भिन्न किसी अन्य भाषा का सीमित प्रयोग प्राधिकृत करने के लिए राष्ट्रपति का पूर्व अनुमोदन।
3. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए हिंदी शिक्षण योजना और पत्र-पत्रिकाओं और उससे संबंधित अन्य साहित्य के प्रकाशन सहित संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित सभी मामलों के लिए केंद्रीय उत्तरदायित्व।
4. संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित सभी मामलों में समन्वय, जिनमें प्रशासनिक शब्दावली, पाठय़ विवरण, पाठय़ पुस्तकें, प्रशिक्षण पाठय़क्रम और उनके लिए अपेक्षित उपस्कर (मानकीकृत लिपि सहित) शामिल हैं।
5. केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा का गठन और संवर्ग प्रबंधन।
6. केंद्रीय हिंदी समिति से संबंधित मामले।
7. विभिन्न मंत्रालयों/विभागों द्वारा स्थापित हिंदी सलाहकार समितियों से संबंधित कार्य का समन्वय।
8. केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो से संबंधित मामले।
9. हिंदी शिक्षण योजना सहित केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान से संबंधित मामले।
10. क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से संबंधित मामले।
11. संसदीय राजभाषा समिति से संबंधित मामले।

राजभाषा विभाग की 50 वर्षों की उपलब्धियां

इस प्रकार, अब हमें सर्वविदित है कि संघ सरकार के समस्त कार्यालयीन कामकाज राजभाषा के संबंध में संविधान में वर्णित प्रावधानों तथा इस संबंध में संघ सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियमों, नियमों एवं विनियमों के अंतर्गत संचालित किया जाना अनिवार्य है। अतः सरकारी कार्यालयों के कामकाज में राजभाषा हिन्दी को देश भर में प्रभावी रूप से लागू करवाने तथा संघ सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का उचित अनुपालन करवाने हेतु एक ऐसे विभाग के निर्माण की आवश्यकता थी जो ज़िम्मेदारीपूर्वक काम करते हुए सहभागिता, प्रोत्साहन एवं देश की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करते हुए तथा सभी भारतीय भाषाओं के साथ सामंजस्य बैठाते हुए एवं बंधुता की भावना के साथ आगे बढ़ते हुए राजभाषा हिन्दी को उच्चतम सम्मान दिला सके। इस प्रकार, वर्ष 1975 में गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग का गठन किया गया था। राजभाषा विभाग ने वर्ष 1975 से लेकर अब तक राजभाषा हिन्दी को एक सम्मानजनक स्थान दिलाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय तथा संसदीय राजभाषा समिति के माध्यम से राजभाषा विभाग ने सम्पूर्ण भारत में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। एक ओर जहां, केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान ने केंद्र सरकार तथा इसके नियंत्रणाधीन उपक्रमों, निगमों, सांविधिक निकायों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी भाषा, हिंदी टंकण (मैनुअल)/हिंदी शब्द संसाधन (कंप्यूटर) तथा हिंदी आशुलिपि में दक्षता प्रदान कर संविधान के प्रावधानों के अनुरूप सभी शासकीय कार्य राजभाषा हिंदी में किए किए जाने हेतु दक्ष एवं सक्षम बनाया है तो वहीं दूसरी ओर, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा केंद्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों आदि के कोड, मैनुअल और फार्मों जैसे असांविधिक दस्तावेजों का अनुवाद, प्रशिक्षण सामग्रियों का अनुवाद, तथा अनुवाद कार्य से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों को अनुवाद का प्रशिक्षण प्रदान करने, प्रशासनिक शब्दावली और अभिव्यक्तियों में एकरूपता सुनिश्चित करने इत्यादि का महत्त्वपूर्ण कार्य कर राजभाषा हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इसके अलावा, केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में संघ की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन एवं राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से देश के विभिन्न क्षेत्रों में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा 08 क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों की स्थापना की गई हैं जिसके माध्यम से केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों, बीमा कम्पनियों, निगमों, बोर्डों, संगठनों आदि में राजभाषा अधिनियम, 1963, राजभाषा नियम, 1976 तथा राजभाषा से संबंधित विभिन्न आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करवाया जा रहा है। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की स्थापना की जाती है तथा इन समितियों की नियमित बैठकों का आयोजन करवाकर राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को गति दी जाती है। इसके अतिरिक्त, गृह मंत्रालय द्वारा संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया है। यह एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति है जिसमें 20 लोकसभा एवं 10 राज्यसभा सांसदों सहित कुल 30 सांसद शामिल होते हैं। भारत के गृहमंत्री इस समिति के अध्यक्ष होते हैं। इस समिति का मुख्य उद्देश्य सरकार के कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा करना है। यह समिति अब तक 16,401 से अधिक कार्यालयों का निरीक्षण कर चुकी हैं और लगभग 882 गणमान्य व्यक्तियों का मौखिक साक्ष्य भी ले चुकी हैं, जिनमें उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश, राज्यों के मुख्यमंत्री और राज्यपाल शामिल हैं। इसी कार्य के आधार पर समिति अब तक अपने प्रतिवेदन के बारह खण्ड राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है। नौ खण्डों में की गई सिफारिशों पर राष्ट्रपति जी के आदेश पारित हो गये हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रभावी एवं जमीनी कार्यान्वयन की दिशा में संसदीय राजभाषा समितियों द्वारा किए गए राजभाषा निरीक्षण मील का पत्थर साबित हुए हैं।

राजभाषा विभाग के अंतर्गत चलने वाले विभिन्न हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रमों जैसे- प्राज्ञ, प्रबोध, प्रवीण और पारंगत, हिन्दी आशुलिपि एवं टंकण, प्रोत्साहन योजनाओं आदि ने राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी महती भूमिका निभाई है। सीडैक एवं अन्य तकनीकी विभागों के सहयोग से हिन्दी संबंधी आईटी टूल्स के विकास ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार को एकदम सरल बना दिया है। राजभाषा संबंधी ऑनलाइन तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने, स्मृति आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर सारथी , हिन्दी शब्दकोश-हिन्दी शब्द सिंधु, लीला ऐप के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ पाठ्यक्रमों को उपलब्ध कराना तथा ई-सरल हिन्दी शब्दकोश जैसे नूतन पहल के जरिये राजभाषा हिन्दी को आगे ले जाने का काम राजभाषा विभाग की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में शामिल है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न प्रकार के राजभाषा सम्मेलनों एवं राजभाषा पुरस्कारों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है इससे राजभाषा हिन्दी में कामकाज करने का प्रचलन बढ़ा है तथा राजभाषा हिन्दी को आमजन तक ले जाने में भी काफी मदद मिली है। राजभाषा विभाग द्वारा जारी किया जाने वाला वार्षिक कार्यक्रम राजभाषा हिन्दी के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में सबसे महत्तपूर्ण कदम है जिससे राजभाषा कार्यान्वयन को एक गति और दिशा मिली है। इस तरह, राजभाषा विभाग ने 50 वर्षों दौरान राजभाषा हिन्दी के उत्थान हेतु अनगिनत एवं कई ऐतिहासिक कार्य किए हैं।

अगर हम, संवैधानिक प्रावधानों तथा राजभाषा संबंधी क़ानूनों के इतर बात करें तो राजभाषा विभाग ने इन 50 वर्षों में भारतीय जनमानस के दिलों में अपनी जगह बनाई है। विभिन्न संस्थानों, उपक्रमों, बैंकों, सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों, सरकारी स्कूलों एवं विश्वविद्यालयों आदि के जरिये राजभाषा विभाग के कार्यों का प्रचार-प्रसार इतना व्यापक रूप से हुआ है कि राजभाषा हिन्दी अब एक नए स्वरूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने हेतु तैयार है।

राजभाषा हिन्दी के समक्ष चुनौतियाँ एवं भविष्य की दिशा

राजभाषा विभाग के पास राजभाषा हिन्दी को भविष्य में आगे ले जाने की अपार संभावनाएँ हैं। भारत एक विशाल जनसंख्या वाला बहुभाषिक देश है। भारतीय संविधान ने सभी नागरिकों को स्वतंत्र एवं गरिमापूर्ण एवं समानता के साथ जीवन जीने का अधिकार प्रदान किया है। इसी प्रकार देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु सभी भाषा-भाषियों को भी संविधानसम्मत अपनी भाषा का प्रयोग के अवसर प्रदान किए गए हैं। लेकिन फिर भी सम्पूर्ण भारत के नागरिकों हेतु संपर्क की एकमात्र भाषा आज भी हिन्दी ही बनी हुई है। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो देश के समस्त नागरिकों को किसी न किसी रूप में एकजुट करती है। हिन्दी, देश को एकता के सूत्र में पिरोती है। अतः राजभाषा हिन्दी को एक नई ऊंचाई पर पहुंचाने में इस संपर्क भाषा का लाभ राजभाषा विभाग द्वारा उठाया सकता है।

आज भारत ही नहीं बल्कि विश्व के तमाम विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई-लिखाई जा रही है तथा शोध-कार्य भी हो रहे हैं लेकिन देश के अंदर हिन्दी या राजभाषा हिन्दी के विकास के समक्ष कई चुनौतियाँ हैं जैसे कि देश में हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूलों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों तथा हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों दोनों में ही लगातार गिरावट आ रही है जिसके कारण हिन्दी भाषा का ज्ञान रखने वाले तथा हिन्दी में पढ़ने-लिखने वालों की संख्या में भी लगातार गिरावट आ रही है वहीं हिन्दी अब सिर्फ बोलने एवं समझने तक की भाषा दिन-प्रतिदिन बनती जा रही है। तकनीकी विकास के कारण हिन्दी अब पढ़ने-लिखने एवं बोलने तथा समझने के दृष्टिकोण से एकदम आसान भाषा बन चुकी है। इसके बावजूद हिन्दी अभी तक अपना स्वर्णिम स्थान पाने में सफल नहीं हो पायी है जिसका मुख्य कारण यह है कि हिन्दी अभी तक का सम्पूर्ण रूप से रोजगारोन्मुखी भाषा नहीं बन पाई है। हिन्दी भाषी राज्यों में भी अँग्रेजी माध्यम के स्कूलों एवं कॉलेजों की बाढ़ सी आ गई है। अभिभावक बेहतर भविष्य एवं अँग्रेजी भाषा की वैश्विक पहुँच एवं स्वीकृति को देखकर अपने बच्चों को अँग्रेजी माध्यम के संस्थानों में शिक्षा ग्रहण करने हेतु भेजने लगे हैं जिससे बच्चों में अँग्रेजी में ही पढ़ने-लिखने और बोलने की आदत विकसित हो जाती है। अतः जब वे रोजगार प्राप्त कर सरकारी संस्थानों का हिस्सा बनते हैं और जब उन्हें राजभाषा हिन्दी में कामकाज करने को कहा जाता है तब उन्हें कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार राजभाषा विभाग की चुनौतियाँ बढ़ ती जाती है।

अतः अगर हमें राजभाषा हिन्दी को सम्मानजनक स्थिति में पहुंचाना है तो भविष्य की दिशा यह होनी चाहिए है कि सरकार कम से कम हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी माध्यम के गुणवत्तापूर्ण स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों की स्थापना करें। हिन्दी को रोजगार उन्मुखी भाषा बनाने हेतु उद्योग जगत के साथ बेहतर तालमेल की आवश्यकता है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा कुछ कड़े फैसले लेने चाहिए तथा राजभाषा अधिनियम/नियमों आदि में संशोधन करना चाहिए और हिन्दी भाषी राज्यों में कार्यरत सभी हिन्दीभाषी सरकारी कार्मिकों को केवल हिंदी में ही कामकाज करने हेतु निर्देशित किया जाना चाहिए, तभी सही मायने में राजभाषा हिन्दी का उत्थान हो सकता है। इसके अतिरिक्त, राजभाषा हिन्दी के बहुआयामी विकास तथा प्रचार-प्रसार में सूचना प्रौद्योगिकी, तकनीकी एवं कृत्रिम बुद्धिमता (AI) के क्षेत्र में हुए विकास की मदद ली जा सकती है तथा पाठ्य-पुस्तकों, साहित्यों, मानक ग्रंथों एवं अन्य तकनीकी साहित्यों का सरल एवं सटीक हिन्दी रूपान्तरण उपलब्ध कराकर हिन्दी पढ़ने-लिखने हेतु आम नागरिकों को प्रेरित किया जा सकता है। आज, राजभाषा हिन्दी के प्रभावशाली अनुपालन हेतु कृत्रिम बुद्धिमता (AI) का प्रयोग एक अनिवार्य शर्त बन चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमता (AI) और राजभाषा को एकीकृत करके भाषा को नया आयाम दिया जा सकता है। इसकी मदद से हम भाषा सीखने और उसको मानकीकृत करने के लिए नए सॉफ्टवेयरों का विकास भी किया जा सकता है। अनुवाद, डिजिटाइजेशन, एआई समर्थित वॉइस असिस्टेंस, राइटिंग टूल आदि के प्रयोग से राजभाषा हिन्दी को प्रौद्योगिकी के साथ और मजबूती से जोड़ा जा सकता है। साथ ही अब, राजभाषा हिन्दी को सरकारी कार्यालयों एवं सरकारी आयोजनों से बाहर निकालने की आवश्यकता है तथा अब आम नागरिकों, छात्रों, प्रबुद्ध नागरिकों हेतु हिन्दी कार्यशालाओं, सेमीनारों इत्यादि के आयोजन की जरूरत है।

अतः इन 50 वर्षों में राजभाषा विभाग के अथक प्रयासों के कारण केंद्र सरकार के कार्यालयों में आज हिंदी मजबूती के साथ आगे तो बढ़ रही है लेकिन इसे और अधिक बल तब मिलेगा जब हम प्रत्येक स्तर पर हिंदी माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए। हिंदी भाषा के विकास हेतु आधारभूत जरूरतों पर ध्यान देने के साथ-साथ नई तकनीकों का प्रभावशाली ढंग से उपयोग करने का समय अब आ चुका है। तब ही बोलने से इतर पढ़ने और लिखने की भाषा बन सकेगी।

संदर्भ स्त्रोत :-

1. राजभाषा विभाग की वैबसाइट

लेख

आस्था, परंपरा, संस्कृति एवं साहित्य के संगम का अद्भुत शहर प्रयागराज

ओम प्रकाश खरवार
सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव , नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

प्राचीनकाल से ही प्रयागराज एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक नगरी के रूप में प्रसिद्ध है । प्रयागराज भारत के सबसे पुराने शहरों में से एक है। प्राचीन ग्रंथों में इसे 'प्रयाग' या 'तीर्थराज' के नाम से जाना जाता है और इसे भारत के सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक माना जाता है। यह तीन नदियों- गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्थित है। समागम-बिंदु को त्रिवेणी के रूप में जाना जाता है तथा यह हिन्दू धर्म में बहुत ही पवित्र स्थल माना जाता है।

प्रयागराज में प्रत्येक छः वर्षों में कुंभ तथा प्रत्येक बारह वर्षों में महाकुंभ का आयोजन होता है और यह धरती पर आयोजित होने वाला तीर्थयात्रियों का यह सबसे बड़ा आयोजन है। एक तीर्थस्थल के रूप में प्रयागराज हिन्दू धर्म में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। परंपरागत तौर पर नदियों का मिलन बेहद पवित्र माना जाता है, लेकिन संगम का मिलन अतिपवित्र माना गया है। क्योंकि यहां गंगा, यमुना और सरस्वती का अद्भुत मिलन होता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार मोहिनी (श्री हरि विष्णु अवतार) अमृत से भरा कुंभ (बर्तन) लेकर जा रहे थे कि बीच में ही असुरों से छीना-झपटी में अमृत की चार बूंदें गिर गई थीं। यह बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन रुपी तीर्थस्थानों में गिरीं । तीर्थ वह स्थान होता है जहां कोई भक्त इस नश्वर संसार से मोक्ष को प्राप्त करता है। ऐसे में जहां-जहां अमृत की बूंदें

गिरी वहां चार-चार साल के अंतराल पर बारी-बारी से कुंभ मेले का आयोजन होता है। इन तीर्थों में भी संगम को तीर्थराज के नाम से जाना जाता है। संगम में हर बारह साल पर कुंभ का आयोजन होता है।

भारत में महाकुंभ धार्मिक स्तर पर बेहद पवित्र और महत्वपूर्ण आयोजन है। इसमें लाखों लोग शिरकत करते हैं। महीने भर से अधिक समय तक चलने वाले इस आयोजन में तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए टेंट लगा कर एक छोटी सी नगरी अलग से बसाई जाती है। यहां सुख-सुविधा की सारी चीजें जुटाई जाती हैं। यह आयोजन प्रशासन, स्थानीय प्राधिकरणों और पुलिस की मदद से आयोजित किया जाता है। इस मेले में दूर-दूर के जंगलों, पहाड़ों और कंदराओं से साधु-संत आते हैं। कुंभयोग की गणना कर स्नान का शुभ मुहूर्त निकाला जाता है। स्नान के पहले मुहूर्त में नागा साधु स्नान करते हैं। इन साधुओं के शरीर पर भभूत लिपटी रहती है, बाल लंबे होते हैं और यह मृगचर्म पहनते हैं। स्नान के लिए विभिन्न नागा साधुओं के अखाड़े बेहद भव्य तरीके से जुलूस की शक्ल में संगम तट पर पहुंचते हैं। पिछले महाकुंभ का आयोजन 2013 हुआ था। इस प्रकार 12 वर्ष के बाद महाकुंभ का आयोजन एक बार पुनः वर्ष 2025 में सम्पन्न हुआ। वर्ष 2025 का महाकुंभ एक अद्भुत एवं अविस्मरणीय आयोजन था। वर्ष 2025 के महाकुंभ में करोड़ों श्रद्धालुओं ने आस्था के महा संगम में डुबकी लगाई।

प्रयागराज को सभी तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ माना गया है। जिसका वर्णन ब्रह्मपुराण में प्राप्त होता है, 'प्रकृष्टत्वा प्रयागो सौ प्राधान्या राज शब्दवान्' अपने प्रकृष्टत्य, अर्थात् उत्कृष्टता के कारण यह प्रयाग है और प्रधानता के कारण राज शब्द से युक्त है। यूं तो अनेक शास्त्रों में तीर्थराज की महिमा का बखान है परंतु एक पौराणिक कथा के अनुसार, शेषनाग जी से ऋषियों ने पूछा की प्रयागराज को तीर्थराज क्यों कहा जाता है ? शेषनाग जी ने उत्तर दिया कि एक समय सभी तीर्थों की श्रेष्ठता की तुलना की गई। भारत के समस्त तीर्थों को एक तुला के पलड़े पर रखा गया और दूसरे पलड़े पर केवल प्रयागराज को। परिणामस्वरूप, इन सबमें प्रयागराज का पलड़ा भारी रहा। दूसरी बार सप्तपुरियों को तुला पर रखा गया, फिर भी प्रयागराज का पलड़ा झुका रहा। इस प्रकार प्रयागराज की सर्वोच्चता प्रमाणित हुई।

जिस प्रकार सनातन धर्म अनादि है, उसी प्रकार प्रयागराज की महिमा का कोई आदि-अंत नहीं है। भारतवर्ष विश्व की आत्मा है, तो प्रयागराज भारत का प्राण है। भारतीय आस्था, तप और पुण्य का अनमोल केंद्र है। यहां पुण्य सलिला मकरवाहिनी गंगा, कूर्मवाहिनी यमुना और हंसारूढ़ सरस्वती का पावन संगम है, जिसके दर्शन मात्र से जन्म-जन्मान्तर के पापों का नाश हो जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार परमपिता ब्रह्माजी ने सृष्टि रचना के लिए इस भूमि पर यज्ञ किया था। प्रयागराज की भूमि अनेक ऋषि-मुनियों, साधु-संतों, संन्यासियों, तपस्वियों, मनीषियों की उपदेश प्राप्त कर शंकर ने अपनी दिग्विजय यात्रा आरम्भ की थी और आचार्य मण्डन मिश्र को पराजित तपस्थली रही है। आदि शंकराचार्य की दिग्विजय यात्रा

का केन्द्र बिन्दु प्रयागराज ही रहा है। कुमारिल भट्ट से उपदेश प्राप्त कर शंकर ने अपनी दिग्विजय यात्रा प्रारम्भ की थी और आचार्य मण्डन मिश्र को पराजित किया था।

प्रयागराज के संगम क्षेत्र में ऐसी दिव्य ऊर्जा तथा शक्ति है, जो समाज के प्रत्येक वर्ग को अपनी ओर आकर्षित करती है। समूचे देश को अनेकता में एकता का संदेश देती है। महाकुम्भ का विराट पर्व विभिन्न देशों की संस्कृतियों को एक करने का कार्य करता है क्योंकि पूरे विश्व से विद्वान यहां आकर एक माह पर्यन्त अपने ज्ञान-विज्ञान की चर्चा एक-दूसरे में साझा करते हैं। प्रयागराज एक नगर मात्र नहीं है बल्कि भारतीय आध्यत्मिक-सांस्कृतिक चेतना का केंद्र है और महाकुम्भ महापर्व इस हेतु को गागर में सागर की तरह जन-जन में प्राण का संचार करता है। स्कंद पुराण, अग्नि पुराण, शिव पुराण, ब्रह्म पुराण, वामन पुराण और महाभारत सहित अनेक ग्रंथों में प्रयागराज की महिमा का उल्लेख है।

श्री लेटे हुए हनुमान जी का मन्दिर

प्रयागराज के दारागंज मोहल्ले में गंगा जी के किनारे लेटे हुए हनुमान जी का मन्दिर है। यह कहा जाता है कि संत समर्थ गुरु रामदास जी ने यहाँ भगवान हनुमान जी की मूर्ति स्थापित की थी। शिव-पार्वती, गणेश, भैरव, दुर्गा, काली एवं नवग्रह की मूर्तियाँ भी मन्दिर परिसर में स्थापित हैं। निकट में श्री राम जानकी मन्दिर एवं हरित माधव मन्दिर हैं।

ऐसा माना जाता है हनुमानजी की यह विचित्र प्रतिमा दक्षिणाभिमुखी और 20 फीट लंबी है। यह भी माना जाता है कि यह धरातल से कम से कम 67 फीट नीचे है। संगम नगरी में इन्हें बड़े हनुमानजी, किले वाले हनुमानजी, लेटे हनुमानजी और बांध वाले हनुमानजी के नाम से जाना जाता है। इस प्रतिमा के बारे ऐसा माना जाता है कि इनके बाएं पैर के नीचे कामदा देवी और दाएं पैर के नीचे अहिरावण दबा है। उनके दाएं हाथ में राम-लक्ष्मण और बाएं हाथ में गदा शोभित है। बजरंगबली यहां आने वाले सभी भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

यहां के बारे में ऐसा भी कहा जाता है कि लंका पर जीत हासिल करने के बाद जब हनुमानजी लौट रहे थे तो रास्ते में उन्हें थकान महसूस होने लगी। तो सीता माता के कहने पर वह यहां संगम के तट पर लेट गए। इसी को ध्यान में रखते हुए यहां लेटे हनुमानजी का मंदिर बन गया।

यह मंदिर कम से कम 600-700 वर्ष पुराना माना जाता है। बताते है कि कन्नौज के राजा को के कोई संतान नहीं थी। उनके गुरु ने उपाय के रूप में बताया, 'हनुमानजी की ऐसी प्रतिका निर्माण करवाइए जो राम लक्ष्मण को नाग पाश से छुड़ाने के लिए पाताल में गए थे। हनुमानजी का यह विग्रह विंध्याचल पर्वत से बनवाकर लाया जाना चाहिए।' जब कन्नौज के राजा ने ऐसा ही किया और वह विंध्याचल से हनुमानजी की प्रतिमा नाव से लेकर आए। तभी अचानक से नाव टूट गई और यह प्रतिका जलमग्न हो गई। राजा को यह देखकर बेहद दुख हुआ और वह अपने राज्य वापस लौट गए। इस घटना के कई वर्षों बाद जब गंगा का जलस्तर घटा तो वहां पूजा-अर्चना कर रहे राम भक्त बाबा बालगिरी महाराज को यह प्रतिमा मिली । फिर उसके बाद वहां के राजा द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह शहर काफी चर्चित रहा है तथा आजादी के आंदोलन में इस शहर ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है तथा प्रयागराज शहर भारत के स्वतंत्रता संग्राम में कई महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी रहा – 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उभरने से लेकर 1920 के दशक में महात्मा गांधी की अहिंसा आंदोलन की शुरुआत तक। वर्तमान में भी में इस शहर के कोने-कोने पर पर ब्रिटिश शासन की छाप साफ दिखाई देती है।

भौगोलिक दृष्टि से भी प्रयागराज शहर का बड़ा महत्त्व है क्योंकि भारतीय मानक समय रेखा प्रयागराज शहर के निकट से गुजरती है। प्रयागराज उत्तर प्रदेश के दक्षिणी हिस्से में 25.45 डिग्री उत्तर तथा 81.84 डिग्री पूर्व पर स्थित है। इसके दक्षिणी और दक्षिण पूर्व में बागेलखण्ड क्षेत्र, पूर्व में मध्य गंगा घाटी या पूर्वांचल, दक्षिण-पश्चिम में बुंदेलखंड क्षेत्र, उत्तर और उत्तर-पूर्व में अवध क्षेत्र है। पश्चिम में कौशाम्बी के साथ प्रयागराज दोआब बनाता है जिसे निचला दोआब क्षेत्र भी कहते हैं। प्रयागराज के उत्तर में प्रतापगढ़, पूर्व में संत रविदासनगर, दक्षिण में रीवा (म०प्र०) तथा पश्चिम में कौशाम्बी स्थित हैं। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्र 5482 वर्ग मीटर किमी है। जिले को 8 तहसील, 20 विकास खंड में विभाजित किया गया है।

इलाहाबाद संग्रहालय

इलाहाबाद संग्रहालय सिविल लाइन्स क्षेत्र के हरे-भरे कम्पनी बाग के नाम से प्रसिद्ध चन्द्रशेखर आजाद पार्क में स्थित है। सन् 1863 में राजस्व परिषद द्वारा तत्कालीन उत्तर पश्चिम प्रान्त की सरकार से पब्लिक लाइब्रेरी और एक संग्रहालय की स्थापना हेतु निवेदन किया गया। प्रान्तीय सरकार के अनुदान से प्रसिद्ध पुरालेख शास्त्री सर विलियम म्योर और महाराजा विजय नगरम को अधीक्षक पुस्तकालय एवं संग्रहालय के रूप में नियुक्त किया गया तथा 1878 ई. में आरनेट भवन को उद्घाटित कर एकत्रित संग्रह को रखा गया। 1881 ई. में अपरिहार्य कारणों से संग्रहालय बंद हो गया। 1923-24 ई. में पंडित जवाहरलाल नेहरू, अध्यक्ष, इलाहाबाद म्यूनिसिपल बोर्ड द्वारा संग्रहालय को पुनः खोलने का उपक्रम बोर्ड के तत्कालीन कार्यकारी अधिकारी पंडित बृजमोहन व्यास के निर्देशनों के अधीन प्रारम्भ हुआ और 1931 में म्यूनिसिपल भवन में संग्रहालय खुला। पंडित व्यास के अथक प्रयत्नों सें संग्रहालय के लिए महत्वपूर्ण संग्रहों का अधिग्रहण हुआ जिसमें भरहुत और भूमरा जनपद सतना, म0प्र0 का प्राचीन मूर्ति शिल्प है।

1942 ई. में एस.सी. काला, प्रथम क्यूरेटर ने संग्रहालय के संग्रहों की समृद्धि के लिए आवश्यक प्रसास किए, विशेषकर पंडित नेहरू जी के व्यक्तिगत संग्रह और बंगाल स्कूल ऑफ़ पेन्टिंग उल्लेखनीय है। स्थान के अभाव के कारण यह निर्णय हुआ कि संग्रहालय को म्यूनिसिपल बोर्ड के भवन से कम्पनी बाग अथवा चन्द्रशेखर आजाद पार्क के वर्तमान भवन में स्थानान्तरित कर देना चाहिए। वर्तमान संग्रहालय भवन जिसे प्रयाग संग्रहालय कहा जाता था उसकी आधार शिला 14 दिसम्बर 1947 को पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा रखी गई और 1954 में संग्रहालय जनसामान्य के लिए खोल दिया गया। कलाकृतियों के महत्त्वपूर्ण संग्रह को देखते हुए सितम्बर 1985 में संस्कृति विभाग, भारत सरकार द्वारा यह राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था घोषित की गई। संग्रहालय की गतिविधियों को शासित करने हेतु समिति पंजीकरण अधिनियम 1960 के अन्तर्गत 6 सितम्बर 1985 को एक समिति अस्तित्व में आयी। यह पूर्णतः भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित है। राज्यपाल, उ.प्र. पदेन इलाहाबाद संग्रहालय समिति के अध्यक्ष हैं।

संग्रहालय में 16 वीथिकाएं हैं जिसमें विविध प्रकार के संग्रह हैं यथा मूर्तिशिल्प, मृण्मूर्ति, लघुचित्र कला, आधुनिक चित्र कला, पुरातात्विक वस्तु, मुद्राएं, अस्त्र और शस्त्र, वस्त्र, पाण्डुलिपि तथा फरमान आदि उल्लेखनीय हैं। मूर्ति कला संग्रह में अशोक स्तम्भ शीर्ष (तीसरी शती ई. पूर्व) 58 भरहुत स्तूप के (दूसरी शती ई.पू.) कला शिल्प जिसमें जातक कथाओं के दृश्य है, स्तम्भ, बड़ेर, तोरण पूर्व कला शिल्प वीथिका में प्रदर्शित हैं। मध्य कालीन मूर्ति शिल्प अनुभाग में वैष्णव, शाक्त, शैव तथा जैन मूर्तियां सुन्दर एवं व्यवस्थित ढंग से प्रदर्शित हैं। यहाँ लघु चित्र कला एवं आधुनिक चित्र कला का समृद्धि संग्रह है। लघुचित्र कला में राजस्थानी, पहाड़ी, मुगल और कम्पनी शैली के चित्र हैं। आधुनिक कला वीथिका में गोविन्द और रुसी चित्रकार निकोलस और स्वेतोश्लाव रोरिक का महत्वपूर्ण स्थान है। बंगाल स्कूल संग्रह में असित कुमार हलदार, अवनिन्द्र नाथ टैगोर, गगनेन्द्र नाथ टैगोर, नन्दलाल घोष, जामिनी राय और सूधीर रंजन खस्तगीर के कृतियों पर इलाहाबाद संग्रहालय में अमूल्य संग्रह है। संग्रहालय में सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, मैथिलीशरण गुप्त, रामकुमार वर्मा आदि साहित्यकारों की पाण्डुलिपियां एवं व्यक्तिगत पत्रों का महत्वपूर्ण संग्रह है। इलाहाबाद संग्रहालय के अस्त्र-शस्त्र संग्रह में दुर्लभ पिस्तौलें, राइफल, बन्दूकें, तलवारें तथा 18वीं-19वीं शती के कवच हैं। वस्त्र एवं साज-सज्जा संग्रह में सोने की जरी का काम और काष्ठ कला कृतियां उल्लेखनीय हैं।

नवीन यमुना सेतु

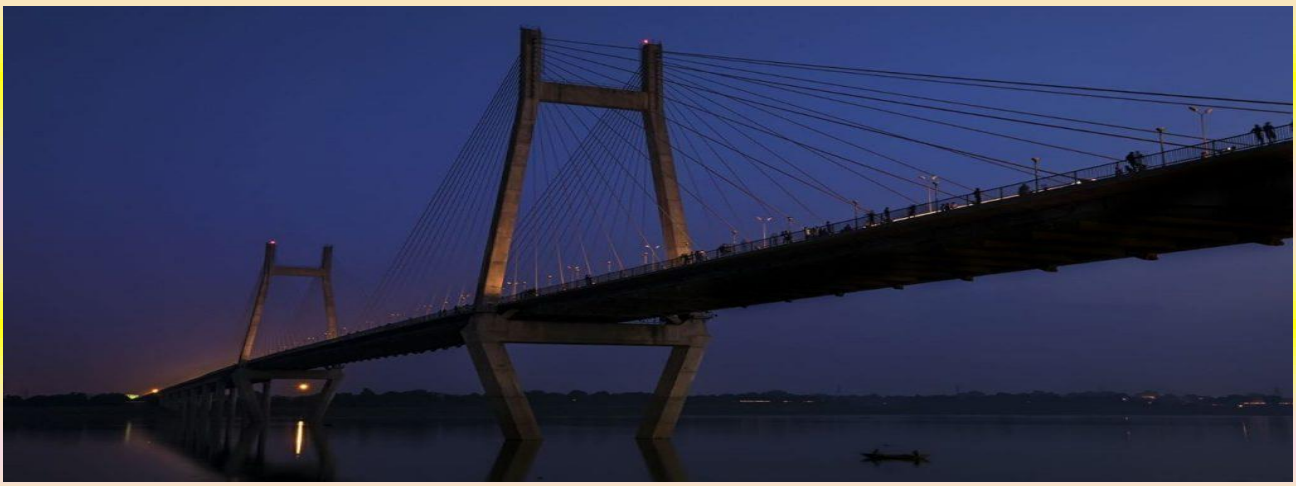

नवीन यमुना सेतु प्रयागराज की उपलब्धियों में से एक हैं। इसकी छवियों से इस सेतु के उत्कृष्ट वास्तुकला का बोध होता है। प्रभात तथा संध्या काल में इस सेतु का दृश्य सम्मोहित कर देने वाला होता है।

नवीन यमुना सेतु, जिसे नैनी ब्रिज के नाम से भी जाना जाता है, भारत के सबसे लंबे केबल वाले पुलों में से एक है। यह यमुना नदी पर उत्तर-दक्षिण दिशा में स्थित है तथा यह नैनी क्षेत्र को प्रयागराज से जोड़ता है। यह वर्ष 2004 में पुराने नैनी ब्रिज पर यातायात की भीड़ को कम करने के लिए बनाया गया था। पुल का निर्माण हिंदुस्तान कंस्ट्रक्शन कंपनी और हुंडई इंजीनियरिंग द्वारा संयुक्त रूप से किया था।

नवीन यमुना सेतु आधुनिक डिजाइन और संरचना के साथ निर्मित भारत में पहला छः लेन वाला पुल है। इसमें कंक्रीट सामग्री से बने दो स्तम्भ हैं जो स्टील केबलों द्वारा बंधे इस पुल की छत को सहारा देते हैं। यह पुल प्रयागराज और राष्ट्रीय राजमार्ग-27 के बीच रोड लिंक के रूप में भी कार्य करता है। यह पर्यावरण के अनुकूल और उत्कृष्ट गुणवत्ता के साथ-साथ आधुनिक तकनीक से लैस है जो इस पुल की खास विशेषताओं में से हैं भारत में पुलों का एक शानदार नेटवर्क है और यह पुल देश के बुनियादी ढांचे में जबरदस्त वृद्धि का एक अच्छा उदाहरण है।

खुसरो बाग़

खुसरोबाग एक विशाल ऐतिहासिक बाग है, जहां जहांगीर के बेटे खुसरो और सुल्तान बेगम के मकबरे स्थित हैं। चारदीवारी के भीतर इस खूबसूरत बाग में बलुई पत्थरों से बने तीन मक़बरें मुग़ल वास्तुकला के बेहतरीन उदहारण हैं। इसके प्रवेश द्वार, आस-पास के बगीचों और सुल्तान बेगम के त्रि-स्तरीय मक़बरे की डिज़ाइन का श्रेय आक़ा रज़ा को जाता है, जो जहांगीर के दरबार के स्थापित कलाकार थे।

इस मक़बरे के ऊपर एक विशाल छतरी है, जो मजबूत स्तंभों पर टिकी हुई है। बेगम के मक़बरे के बगल में स्थित है खुसरो की बहन निथार का मक़बरा। वास्तुशिल्प के लिहाज़ से देखें तो यह तीनों मक़बरों में सबसे ज्यादा खूबसूरत है। हालांकि निथार का मक़बरा भीतर से खाली है, उसमे निथार की कब्र नहीं है। यह एक ऊंचे से चबूतरनुमा ढांचे पर बना है। इसकी ख़ूबसूरती कँगूरेदार तख्तियों से और बढ़ती है। स्तंभों की चौकियों के नीचे बने हुए है शानदार कमरें, जिनकी छतें चांद-तारों की पेंटिंग्स से सजाई गई हैं। सेंट्रल रूम की दीवारों पर फूलों की डिज़ाइन उकेरी हुई है। इसके अलावा पर्शियन सनोवर, शराब के प्याले और अन्य डिज़ाइन भी हैं।

अंतिम मक़बरा पड़ता है खुसरो का। अपने पिता जहांगीर के प्रति विद्रोह करने के बाद खुसरो को पहले इसी बाग में नज़रबंद रखा गया था। यहां से भागने के प्रयास में खुसरो मारा गया। कहते हैं यह आदेश खुसरो के भाई और जहांगीर के तीसरे बेटे खुर्रम ने दिया था। बाद में खुर्रम खुद गद्दी पर बैठा और वह बादशाह शाहजहां के नाम से जाना गया।

कुंभ मेला और संगम

आज के आधुनिक इलाहाबाद में स्थित प्रयाग का बतौर तीर्थ हिन्दुओं में एक महत्वपूर्ण स्थान है। परंपरागत तौर पर नदियों का मिलन बेहद पवित्र माना जाता है, लेकिन संगम का मिलन बेहद महत्वपूर्ण माना गया है। क्योंकि यहां गंगा, यमुना और सरस्वती का अद्भुत मिलन होता है। पौराणिक कथाओं के मुताबिक भगवान विष्णु अमृत से भरा कुंभ (बर्तन) लेकर जा रहे थें कि असुरों से छीना-झपटी में अमृत की चार बूंदें गिर गई थीं। यह बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन रुपी तीर्थस्थानों में गिरीं। तीर्थ वह स्थान होता है जहां कोई भक्त इस नश्वर संसार से मोक्ष को प्राप्त होता है। ऐसे में जहां-जहां अमृत की बूंदें गिरी वहां तीन-तीन साल के अंतराल पर बारी-बारी से कुंभ मेले का आयोजन होता है। इन तीर्थों में भी संगम को तीर्थराज के नाम से जाना जाता है। संगम क्षेत्र में हर बारह साल पर कुंभ का आयोजन होता है।

संगम

यह वह स्थान है जहां गंगा का मटमैला पानी यमुना के हरे पानी में मिलता है। यहीं मिलती है अदृश्य मानी जाने वाली सरस्वती नदी। वैसे तो यह अदृश्य नदी है पर माना यह जाता है कि यह भूगर्भ में बहती है। संगम सिविल लाइन्स से 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसे अकबर के किले के से भी देखा जा सकता है।

पवित्र संगम पर दूर-दूर तक पानी और गीली मिट्टी के तट फैले हुए हैं। नदी के बीचों-बीच एक छोटे से प्लॅटफॉर्म पर खड़े होकर पुजारी विधि-विधान से पूजा-अर्चना कराते हैं। धर्मपरायण हिंदू के लिए संगम में एक डुबकी जीवन को पवित्र करने वाली मानी जाती है। संगम के लिए किराये पर नाव किले के पास से ली जा सकती है। कुंभ/महाकुंभ के अवसर पर संगम क्षेत्र मानो जीवंत हो उठता है। देश विदेश भर से श्रद्धालु यहां आते हैं और इसकी रौनक बढ़ाते हैं।

आनंद भवन

आनंद भवन इलाहाबाद का एक ऐतिहासिक भवन संग्रहालय है जो नेहरू परिवार का हुआ करता था। इसका निर्माण मोतीलाल नेहरू जी द्वारा वर्ष 1930 में कराया गया था जो नेहरू परिवार के निवास स्थान की तरह उपयोग होता था। परंतु बाद में इसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा उनके स्थानीय मुख्यालय यानी स्वराज भवन में परिवर्तित कर दिया गया तथा बाद नेहरू परिवार द्वारा इसे दान स्वरूप सरकार को सौंप दिया गया। इसमें जवाहर नक्षत्रशाला भी स्थित है।

जवाहर बाल भवन

स्वराज भवन से ही बाल भवन संचालित होता है। इसकी स्थापना पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने की थी क्योंकि उन्हे ऐसा लगता था कि बाल भवन द्वारा राष्ट्र के छात्रों की क्षमताओं को उचित उपयोग में लाया जा सकता है। बाल भवन छात्रों को भविष्य में रचनात्मक विचारक, दयालु और जिम्मेदार नागरिक बनने में सहायता करता है जिससे वह समाज के लिए योगदान कर सकें।

स्वराज भवन

आनंद भवन के परिसर में स्थित स्वराज भवन मोतीलाल नेहरू जी की राजसी हवेली है। यह नेहरू परिवार का पैतृक घर है जहाँ भारत की पूर्व प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी का जन्म हुआ था। वर्ष 1920 में मोतीलाल नेहरू जी ने इस भवन को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को दानस्वरूप दे दिया था जिसे बाद में भारत सरकार को सौंप दिया गया। इसका स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को परिभाषित करने वाले कई महत्वपूर्ण आंदोलनों के लांच पैड के रूप में इस्तेमाल किया गया था तभी इसे स्वराज भवन के नाम से जाना जाता है।

इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय

ऐतिहासिक इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना 23 सितंबर, 1887 में हुई थी तथा यह भारत के चौथे सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक है। यह संयुक्त प्रांत के लेफ्टिनेंट गवर्नर, सर विलियम म्योर की देख-रेख में स्थापित किया गया था व भवन का सर विलियम एमर्सन द्वारा डिजाइन किया गया था। इस विश्वविद्यालय की वास्तुकला में मिस्र, इंग्लैंड और भारत वास्तु तत्वों के अंश देखे जा सकते हैं।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय का गणित विभाग

वर्ष 1872 में स्थापित इलाहाबाद विश्वविद्यालय का गणित विभाग भारत में शिक्षा के सबसे प्रमुख केंद्रों में से एक है। यह विभाग एक दो मंजिला गॉथिक शैली में निर्मित भवन में मौजूद है जिसकी वास्तुकला में ठेठ इलाहाबादी मेहराब एवं छाया-आकृति देखी जा सकती हैं। इसकी कक्षाओं में ऊँची गुबंद देखी जा सकती हैं तथा दीवार से छत तक पाठ्यपुस्तकों को देखा जा सकता है। विश्वविद्यालय के "पूर्व के ऑक्सफ़ोर्ड" होने के दावे को विभाग स्पष्ट रूप से दर्शाता है। बीजगणित, तरल यांत्रिकी, रेखागणित एवं गणितीय पारिस्थितिकी के कई विश्व प्रसिद्ध विद्वान यहीं से उभरे हैं।

वनस्पति विज्ञान विभाग

वनस्पति विज्ञान विभाग एक औपनिवेशिक युग के भवन में स्थित है जिसकी वास्तुकला में भारत-इस्लामिक शैली के साथ शास्त्रीय समरूपता देखी जा सकती है। यह वर्ष 1923 में स्थापित हुई थी तथा यह चारों ओर से खजूर के पेड़ों से घिरा हुआ है। यह भारत के सबसे पुराने वनस्पति विज्ञान विभागों में से एक है।

विश्वविद्यालय रोड

कर्नलगंज के समीप कटरा में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कला और विज्ञान संकायों के बीच एक गली के रूप में विश्वविद्यालय रोड स्थित है। इस मार्ग की यात्रा के जरिये विश्वविद्यालय के छात्रों के जीवन की यात्रा का अनुभव किया जा सकता है। यहाँ पर ढेरों फुटपाथ विक्रेता देखे जा सकते हैं जो रोजमर्रा के अनेक पदार्थ विक्रय करते हैं। यहाँ विक्रय होने वाले पदार्थों में स्टेशनरी से लेकर भोजन एवं दैनिक जरूरत की वस्तुएं शामिल हैं। इस स्थान के बारे में दिलचस्प तथ्य यह है कि यहाँ किताबें किलोग्राम में बेची जाती हैं।

प्राचीन इतिहास विभाग

इस विभाग ने भारतीय प्रागितिहास, धर्म, दर्शनशास्त्र, पुरातत्त्व एवं मनुष्य जाति के विज्ञान के अध्ययन में बेहद योगदान दिया है। यह प्रोफेसर जी.आर. शर्मा की देख-रेख में स्थापित किया था जिन्होंने पुरातात्विक महत्व की व्यापक खुदाई परियोजनाएं की शुरुआत करी। विभाग द्वारा गंगा घाटी के इतिहास पर प्रकाश डाला गया। जी.आर शर्मा मेमोरियल संग्रहालय में विभाग द्वारा की गई प्राचीन वस्तुओं की खोज संग्रहित है।

केंद्रीय पुस्तकालय

स्कॉटिश, बरोनियल, अवधी, मुगल एवं ब्रिटिश वास्तुकला शैली के मिश्रण से केंद्रीय पुस्तकालय का निर्माण किया गया है जिसके वास्तुकार सर स्विन्टन जैकब थे। वर्तमान संरचना का निर्माण वर्ष 1973 में किया गया था। पुस्तकालय के सामने सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की एक प्रतिमा स्थापित है जो हिन्दी साहित्य के एक प्रख्यापित हस्ती हैं।

सीनेट हॉल

सीनेट हॉल का निर्माण सर स्विन्टन जैकब द्वारा वर्ष 1910-1915 में कराया गया था। यह अनेक छतरी एवं झरोखों द्वारा सजा हुआ है साथ ही इसमें ठेठ इलाहाबादी मेहराब देखे जा सकते हैं। यह महाविद्यालय वर्ष 1951 में स्थापित हुआ था। यह कायस्थ पाठशाला ट्रस्ट द्वारा अनुरक्षित है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ग्यारह घटक और चौदह हॉस्टल कॉलेज हैं।

ब्रिटिश स्मारक

भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना और विस्तार में प्रयागराज ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कह सकते हैं कि प्रयागराज का इतिहास ब्रितानी हुकूमत से पहले और बाद में भी देश के इतिहास के साथ-साथ चला है। 1857 की गदर में भी प्रयागराज ने एक अहम भूमिका निभाई थी। यही वजह है कि अंग्रेजों ने उत्तर प्रदेश की वास्तुकला में अपनी शैली वाली कई बेहतरीन

इमारतों का निर्माण किया। उस दौर में प्रयागराज औपनिवेशिक वास्तुशिल्प कला के संपर्क में आया और इस तरह इंडो-इस्लामिक शैली में परंपरागत यूरोपियन नियो-क्लासिकल और गॉथिक वास्तुकला का समावेश हुआ।

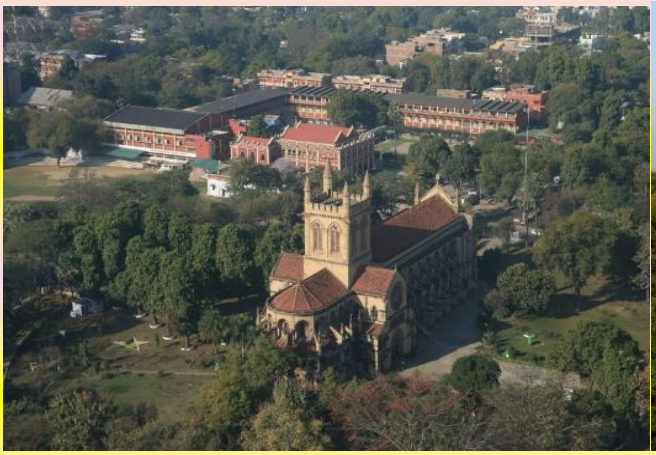

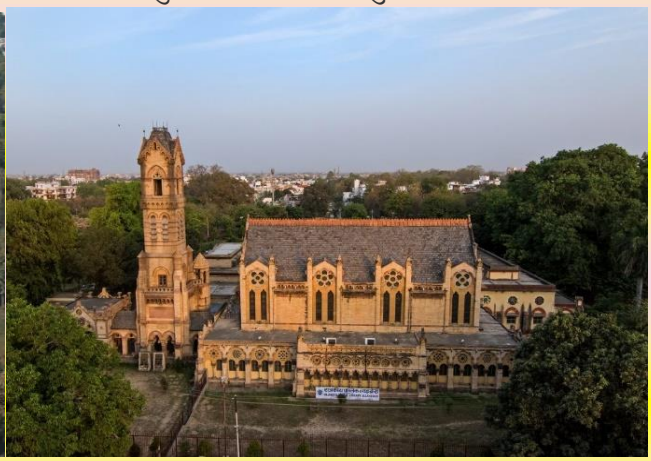

इन इमारतों को आज इंडो-सरकेनिक आर्किटेक्चर का नायाब नमूना करार दिया जाता है। प्रयागराज या प्रदेश के अन्य हिस्सों में निर्मित इन इमारतों की बनावट से लेकर साज-सज्जा में पूरब और पश्चिम की वास्तुकला का समावेश स्पष्ट देखा जा सकता है। इस दौर की इमारतों में जहां एक तरफ परंपरागत गुंबद और मीनारें अनिवार्य हिस्सा होती थीं, तो आधुनिक ब्रिटिश शैली भी उसमें चार चांद लगाने वाली सिद्ध हुई।

चर्च, शिक्षण संस्थानों, रिहायशी इलाकों, महलों और प्रशासनिक भवनों में ब्रितानी शिल्पकला की छाप साफतौर पर दृष्टिगोचर होती है।ब्रितानी स्थापत्य कला की छाप वाली यूनाइटेड प्रोविंस की पूर्ववर्ती राजधानी प्रयागराज की कुछ महत्वपूर्ण इमारतें हैं- इलाहाबाद यूनिवर्सिटी और इलाहाबाद हाई कोर्ट। आल सेंटस केथेड्रल संभवतः एशिया में एंग्लिकन केथेड्रल का सबसे शानदार उदहारण है। 13वीं सदी की गॉथिक शैली में बने इस चर्च का डिज़ाइन सर विलियम एमर्सन ने तैयार किया था।

प्रयागराज का मेयो मेमोरियल हॉल 1879 में आर. रॉकेल बयने ने बनवाया था। 19वीं और 20वीं सदी की औपनिवेशिक स्थापत्य कला का बेहतरीन उदाहरण पेश करती यह इमारत थॉर्नहिल और मेमोरियल लाइब्रेरी के पास है। इसके हॉल 180 फ़ीट ऊंचे हैं और इनकी आंतरिक साज-सज्जा लंदन के साउथ केंसिंग्टन म्यूजियम के प्रोफेसर गैम्बल ने की थी। यह इमारत वाइसराय मेयो की याद में बनवाई गयी जिनकी हत्या कर दी गई थी। यह हाल सार्वजनिक मीटिंग्स, रिसेप्शन और बॉल नृत्य के लिए इस्तेमाल में लाया जाता था।

पर्व एवं महोत्सव

प्रयागराज में विभिन्न पर्व एवं महोत्सव मनाएं जाते हैं जो लोगों के जीवन को हर्षोल्लास से भर देते हैं। धार्मिक पर्वों के अतिरिक्त प्रत्येक वर्ष जिला प्रशासन द्वारा कई सांस्कृतिक एवं खाद्य महोत्सव भी आयोजित किये जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष जनवरी-फरवरी माह में महीने भर चलने वाले माघ मेले के आयोजन से पर्वों का आरम्भ होता हैं। इस अवधि के दौरान लाखों तीर्थयात्री संगम स्नान हेतु प्रयागराज के लिए प्रस्थान करते हैं। माघ मेले के लिए मेला मैदान में आस्थाई शिविरों की व्यवस्था की जाती है। गंगा जल रैली प्रयागराज की एक वार्षिक विशेषता है। पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित वाटर स्पोर्ट्स फेस्टिवल (फरवरी) में कयाकिंग, कैनोइंग इत्यादि जैसे रोमांचक साहसिक खेल शामिल हैं।

मार्च माह में रंगों का पर्व होली हर्षोल्लास से मनाया जाता है। होली पर्व मौसम के परिवर्तन को दर्शाता है तथा वसंत ऋतु के आगमन का सूचक है। भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी (अगस्त – सितम्बर) को श्रद्धा भाव से श्री कृष्णजन्माष्टमी, भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्स्व मनाया जाता है। इसके उपरान्त प्रयागराज में दधिकांदो पर्व मनाया जाता है। इस अवधि के दौरान हर शनिवार-रविवार को तीन सप्ताह तक कलाकारों द्वारा भगवान कृष्ण, सुभद्रा और बालाभद्र का रूप धर कर शोभायात्रा निकाली जाती है। प्रयागराज का दस दिवसीय दशेहरा पर्व अपनी चौकियों के लिए प्रचलित है। प्रमुख चौकियां जैसे पथरचट्टी, पजावा तथा कटरा भव्य एवं रमणीय झाकियों का प्रदर्शन करती हैं। प्रकाश का पर्व, दीपावली (अक्टूबर –

नवम्बर), भगवान राम के घर वापसी और बुराई पर अच्छाई की विजय के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। माना जाता है कि दीपावली के दिन भगवान राम अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात अयोध्या लौटे थे। दीपावली के दिन शहर दीये और रोशनी से जगमगाता है। इस अवसर पर संगम पर हजारों दीये प्रज्जवलित किये जाते हैं जो रमणीय दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

परंपरागत मेले और पर्व

वार्षिक माघ मेला

संगम के पवित्र तट पर हर साल जनवरी-फ़रवरी में माघ मेला लगता है। इस मेले में देश विदेश से श्रद्धालु आते हैं और उनमे से कई कल्पवास करते हैं, जिसमे वे संगम के तट पर एक लम्बी अवधि तक रहते हैं। मेले में प्रशासन द्वारा सभी जरूरत की सेवाएं उपलब्ध करायी जाती है और सुरक्षा, साफ़ सफाई और स्वस्थ्य सेवाओं का उचित प्रबंध रहता है। हर बारहवें वर्ष, माघ मेला कुंभ मेले में तब्दील हो जाता है।

लेख

आजादी के 79 वर्ष की उपलब्धियां और विकसित भारत की ओर बढ़ते कदम

चेतन शर्मा
कनिष्ठ कार्यपालक (एटीएम)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, सीएटीसी, प्रयागराज

अभी हाल ही भारत ने अपना 79 वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया। आजादी के बाद इन 79 साल की राह आसान नहीं रही है। भारत ने बहुत संघर्ष,बलिदान और मेहनत के बल पर सर्वांगीण विकास की जो राह पकड़ी है,वह विकसित भारत 2047 के लक्ष्य के दृष्टिकोण के लिए अनिवार्य थी । सन 2047 में भारत को विकसित बनाने का जो सपना आज देखा जा रहा है, उस विशाल इमारत रूपी सपने के लिए भारत की इन 79 साल की उपलब्धियां नींव की तरह हैं । ये 79 साल सिर्फ किसी एक क्षेत्र में विकास नहीं,अपितु हर क्षेत्र इस देश के नागरिकों का हर संभव प्रयास दर्शाते हैं । यदि विगत वर्षों में भारत की उन्नति को मानचित्र पर दर्शाया जाए तो यह पाते हैं कि इस लोकतान्त्रिक शक्ति में अनेक राजनीतिक दल और उनकी अलग-अलग विचारधारा होने के बावजूद भी भारत की उन्नति का लक्ष्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में बिना किसी अवरोध के स्थानांतरित होता गया। इस देश को विश्वगरु बनाने की राह में कई महापुरुषों जैसे :- जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल,इंदिरा गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी एवं अब्दुल कलाम आजाद इत्यादि का अविस्मरणीय योगदान रहा है।

विगत 79 साल में भारत की उपलब्धियां

बीते पिछले 79 साल में भारत ने बहुत सारे ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं जिनका परिणाम हमें आगे बढ़ते भारत की गति के रूप में देखने को मिलता है। भारत ने आजादी के बाद से ही गुटनिरपेक्षता अर्थात बीच की राह का समर्थन किया है जिससे विश्व पटल पर भारत की छवि एक मित्र राष्ट्र के रूप में स्थापित हुई है। अगर आज हम 1947 के भारत की तुलना 2025 के भारत से करते हैं तो पाते है कि भारत ने एक बहुत ही बड़ा रास्ता तय कर लिया है । चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो या प्रौद्योगिकी या फिर नभ में ऊंची उड़ान भरनी हो या अंतरिक्ष में उपग्रहों का प्रक्षेपण करना हो, भारत हर क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। भारत की प्रगति और सर्वांगीण विकास का सबूत सिर्फ इस बात से मिल जाता है कि 1947 में आजाद होने के बाद से हम एक सफल और मजबूत लोकतान्त्रिक व्यवस्था बरकरार रखे हुए हैं। अगर हम 1947 की बात करे, जहां प्रति व्यक्ति ये मात्र 265 रुपये प्रतिवर्ष थी वह वर्ष 2025 में बढ़कर 1,72,000/- रुपये प्रतिवर्ष हो गई है जो यह दर्शाता है कि भारत प्रगति के पथ पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। इन 79 सालों में भारत का लक्ष्य आबादी के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक संसाधनों को पहुंचाने और उनके जीवन स्तर में सुधार करने का रहा हैं।

अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत

आजादी के बाद से ही भारत ने बहुत ही जल्दी इस बात का एहसास कर लिया था कि विश्व पटल पर अपनी छवि बनाने के लिए अंतरिक्ष के क्षेत्र में प्रगति और विकास की राह अनिवार्य है। इसलिए सन 1960 के दशक से ही भारत ने डॉ विक्रम साराभाई के नेतृत्व में अंतरिक्ष के क्षेत्र में प्रयास करना प्रारंभ कर दिया। अंततः 15 अगस्त 1969 को भारत में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान की स्थापना हुई और तब से लेकर अब तक भारत ने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। सन 1975 में भारत ने अपना पहला उपग्रह आर्यभट्ट का अंतरिक्ष में प्रक्षेपण किया 2008 में चंद्रयान एवं 2014 में मंगलयान का सफल प्रक्षेपण कर अंतरिक्ष के क्षेत्र में दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल हो चुका है। वर्ष 2017 में इसरो ने 104 उपग्रहों का प्रक्षेपण कर विश्व रिकार्ड बनाया। हाल ही में 2023 में चंद्रयान -3 की सफल प्रक्षेपण भी किया है। ऐसा कहा जाता है कि अगर इरादे मजबूत हो तो आकाश ही सीमा है परंतु भारत के संदर्भ में शायद आकाश भी काफी न रहे।

सामाजिक एवं विमानन के क्षेत्र में भारत की स्थिति

आजादी के बाद से ही हर व्यक्ति का व्यक्तिगत विकास भारत के लक्ष्यों में से एक रहा है। सन 1947 में जहां साक्षरता दर सिर्फ 12 % थी जो कि आज बढ़कर 2025 में लगभग 77% हो गई है जो कि यह दर्शाता है कि भारत ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत प्रगति की है। नई शिक्षा नीति इसका ताजा उदाहरण है। आजादी के बाद से ही भारतीय तकनीकी संस्थान, भारतीय प्रबंध संस्थान, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जैसे शिक्षण संस्थानों की स्थापना ने 2025 के इस भारत की नींव रखी थी। आजादी के समय भारत का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) लगभग 30,000 बिलियन डॉलर था जो कि 2025 में बढ़कर 04 ट्रिलियन डॉलर का हो गया है। हम 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हैं और हाल ही में भारत ने ब्रिटेन को पछाड़कर विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। फायर पावर इंडेक्स में भारत का चौथा स्थान यह दर्शाता है कि भारत ने अपनी संप्रभुता को बचाने के लिए भी कई प्रयास किए हैं। भारत में हिंदुस्तान ऐरोनौटिक्स लिमिटेड द्वारा तेजस जैसे लड़ाकू विमानों का निर्माण, ब्रम्होस जैसी मिसाइलों का निर्माण यह दर्शाता है कि भारत ने हथियार विनिर्माण में भी अग्रसर का लक्ष्य स्थापित किया है।

विमानन क्षेत्र में भारत की प्रगति एक अध्ययन का विषय है। सन 1947 में आजादी के समय जब भारत में मात्र 44 विमानपत्तन हुआ करते थे और आज भारत में लगभग 480 से अधिक विमानपत्तन एवं हवाईपट्टियाँ मौजूद है। आज भारत घरेलू उड़ानों का तीसरा सबसे बड़ा बाजार है तथा गतिशक्ति मंत्रालय का लक्ष्य भारत को 2030 तक अंतरराष्ट्रीय और घरेलू उड़ानों का सबसे बड़ा बाजार बनाने का है। भारत सरकार की उड़ान योजना (उड़े देश का आम नागरिक) छोटे शहरों में रह रहे लोगों के हवाई सफर का सपना सच करने की दिशा में काम कर रहा है। इसी का नतीजा है कि भारत का इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा दुनिया का दूसरा सबसे व्यस्त हवाईअड्डा बन गया है।

विकट परिस्थितियों में भारत के ऐतिहासिक निर्णय

भारत ने आजादी के बाद से बीते 79 वर्षों में कठिन संघर्ष कर विकास के इस पथ अपनी पहचान बनाई है। सन 1990 के दशक में भारत की अर्थव्यवस्था कमजोर थी और उस समय सरकार ने कठोर फैसला लेते हुए भारतीय बाजार को वैश्विक कंपनियों के लिए खोल दिया था जिसके कारण आज हम भारत में विकास की यह रफ्तार देख पा रहे हैं। सन 1965 के युद्ध के बाद भारतीय खाद्य निगम की स्थापना यह दर्शाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी हमें भविष्य को ध्यान में रखकर फैसले लेने पड़ते हैं। भारत भले ही वैश्विक शांति का पक्षधर

रहा हो लेकिन देश की सुरक्षा के को ध्यान में रखते हुए सन 1974 और 1998 में स्माइलिंग बुद्ध और मिशन शक्ति के माध्यम से परमाणु परीक्षण करके दुनिया को यह बात दिया की भारत अपने बाहरी और आंतरिक सुरक्षा को लेकर कितना सतर्क है औ रइसने साबित कर दिया कि भारत अपनी सुरक्षा को लेकर किसी देश पर निर्भर नहीं रहेगा। सन 1947 में राजमार्ग का क्षेत्रफल केवल 20,000 किलोमीटर था जो आज बढ़कर 1,70,000 किलोमीटर हो चुका है जो इस बात का प्रतीक है कि भारत के आधारभूत संरचनाओं में व्यापक सुधार हुआ है। 1965 में पाकिस्तान, 1962 में चीन, सन 1999 में पाकिस्तान के साथ कारगिल युद्ध और अभी हाल ही में ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम पूरी दुनिया को यह बता दिया की भारत अपनी संप्रभुता के साथ कभी भी कोई समझौता नहीं करेगा और अपनी सुरक्षा पर आने वाले हर खतरे का उचित जवाब देगा।

उपसंहार

भारत ने सदैव वसुधैव कुटुंबकम की नीति का अनुसरण करते हुए आज तक किसी भी देश के साथ युद्ध नहीं किया है और सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानते हुए हमेशा शांति, सद्भाव और प्रेम का संदेश सम्पूर्ण विश्व को दिया है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं वाला देश है और सदैव से ही विविधता में एकता ही उसकी शक्ति रही है। भारत अपने सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं लोकतान्त्रिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ते हुए विकसित भारत 204 7 के लक्ष्यों को साकार करने के पथ पर अग्रसर है जिसे हम भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी के इन शब्दों से समझ सकते हैं :-

" भारत कोई जमीन का टुकड़ा नहीं है अपितु एक जीता जागता राष्ट्रपुरुष है"

विकसित भारत 2047 के अनुसार भारत 2047 तक (आजादी के 100 वीं वर्षगांठ) पर विकसित राष्ट्र बनने के संकल्प को साकार करने को ओर अपने कदम बढ़ा रहा है और तब तक भारत की अर्थव्यवस्था को 20 से 25 ट्रिलियन का बनाने का लक्ष्य भी रखा गया है। इसके साथ ही प्रति व्यक्ति आय 15000 से 18000 डॉलर प्रतिवर्ष करने का लक्ष्य भी रखा गया है। भारत की प्रगति एवं वैश्विक छवि यह दर्शाती है कि यूनाइटेड नेशन द्वारा घोषित सतत विकास लक्ष्यों के लक्ष्य संख्या 01 " शून्य गरीबी" तथा लक्ष्य 02 " शून्य भुखमरी" की तरफ बढ़ने वाले देशों में शामिल होने की ओर बढ़ रहा है। इस संदर्भ में किसी ने ठीक ही कहा है :-

नभ से ऊंची उड़ान है, धरती पर सम्मान।
विश्वगुरु बनने चला, मेरा हिंदुस्तान॥

लेख

भारत में सहकारिता का इतिहास : विकास की संभावनाएँ और चुनौतियाँ

श्री अरेन्द्र मौर्य
प्रबंधक (एटीएम)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, सीएटीसी, प्रयागराज

सहकारिता आंदोलन ने भारत के सामाजिक तथा आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें लोग स्वेच्छा से संगठित होकर अपने साझा हितों के लिए काम करते हैं। सहकारी संस्थाएँ गरीबों, किसानों और श्रमिकों को एक मंच देती है जिससे वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ सामाजिक तथा आर्थिक रूप से सशक्त बन सकें।

इतिहास

भारत में सहकारिता का इतिहास ब्रिटिश काल से शुरू होता है। वर्ष 1904 में औपचारिक रूप से सहकारी ऋण समितियाँ अधिनियम लागू किया गया, जिसके जरिए ग्रामीण क्षेत्रों में किसाओं को ऋण उपलब्ध कराने के लिए सहकारी समितियाँ बनीं। सन 1912 में सहकारी समितियाँ अधिनियम और बाद में राज्य स्तर पर राज्य सहकारी बैंक, दुग्ध सहकारी समितियाँ, चीनी मिल, विपणन तथा संसाधन उपलब्ध कराने वाली संस्थाएँ अस्तित्व में आयीं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात, सरकार ने सहकारिता क्षेत्र को ग्रामीण विकास का अभिन्न हिस्सा माना। पंचवर्षीय योजनाओं में सहकारिता को विशेष स्थान दिया गया। कृषि, डेयरी, श्रमिक, विपणन, बैंकिंग, आवास, उपभोक्ता आदि क्षेत्रों में सहकारी संस्थाओं का विस्तार हुआ। सन 1969 में राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम की स्थापना तथा सन 1970 के दशक में श्वेत क्रांति आमूल के नेतृत्व में सहकारिता मॉडल की सफलता का प्रमाण बनी।

विकास की संभावनाएँ

भारत में सहकारी क्षेत्र में विकास की अनेक संभावनाएँ हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:-

कृषि क्षेत्र : भारतीय किसानों की बहुसंख्यक आबादी छोटे और सीमांत किसानों की है। सहकारी समितियाँ उन्हें सस्ते ऋण,उर्वरक, बीज तथा बाजार उपलब्ध करती हैं। इससे कृषि उत्पादन बढ़ता है तथा भारतीय कृषक आत्मनिर्भर भी बनता है।

बैंकिंग क्षेत्र : सहकारी बैंक और ग्रामीण विकास बैंक किसानों व छोटे व्यापारियों को वित्तीय सेवाएँ सुलभ कराते हैं। ये बैंक जमीनी स्तर पर बैंकिंग सुविधाओं का ख्याल रखते हैं।

दुश एवं डेयरी क्षेत्र : आमूल, मिल्कफेड राजस्थान, हरियाणा, सुधा, पराग जैसी राज्यस्तरीय डेयरी सहकारी संगठनों ने किसाओं की आय बढ़ाई और पशुपालन के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएँ खोली। इसे ग्रामीण एवं सीमांत क्षेत्र के कृषकों को दुग्ध उत्पादन से आय का एक साधन मिल गया जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ।

महिला सशक्तिकरण : महिला सहकारी समितियाँ खुदरा व्यापार, कुटीर उद्योग एवं सूक्ष्म वित्त जैसी गतिविधियों में सक्रिय हैं। इससे महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

विपणन एवं उपभोक्ता क्षेत्र : कृषि उत्पाद, हस्तशिल्प, डेयरी आदि के विपणन के लिए सहकारी समितियाँ किसानों तथा व्यापारियों को बेहतर मूल्य दिलाने में सक्षम हैं। उपभोक्ता सहकारी समितियाँ उपभोक्ताओं को सस्ता एवं गुणवत्तापूर्वक समान उपलब्ध कराते हैं।

कृषि प्रसंस्करण एवं निर्यात : सहकारी समितियाँ प्रसंकृत सामान को देश-विदेश में निर्यात करती हैं जिससे किसानों और श्रमिकों की आय में वृद्धि होती हैं। इससे किसानों को अधिक लाभ मिलता है।

चुनौतियाँ

सहकारी क्षेत्र में विकास की अनंत संभावनाओं के बीच सहकारी समितियों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी हैं जो निम्नलिखित हैं:-

राजनीतिक हस्तक्षेप : सहकारी समितियाँ की बार राजनीतिक हस्तक्षेप का शिकार बनती हैं जिससे उनका कार्य संचालन और पारदर्शिता प्रभावित होती हैं। इससे सहकारी समितियों का संबल काम होता है।

प्रशासनिक भ्रष्टाचार : कुछ समितियों में कार्यपालिका व प्रबंधन में भ्रष्टाचार की घटनाएँ देखी जा सकती हैं। इसके फलस्वरूप किसानों और श्रमिकों को उनकी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है।

प्रशिक्षण एवं शिक्षा की कमी : समिति के सदस्यों और प्रबंधन को व्यावसायिक एवं तकनीकी प्रशिक्षण की कमी होती है, जिससे कार्य क्षमता प्रभावित होती है। प्रशिक्षण की कमी के कारण समिति सदस्य अपनी पूर्ण कार्य क्षमता से कार्य नहीं कर पाते हैं।

वित्तीय संसाधनों की कमी : कई बार समितियों को आवश्यक पूंजी एवं संसाधन नहीं मिल पाते हैं जिसके चलते वांछित कार्य करने हेतु भी पूंजी की उपलब्धता सुनिश्चित नहीं हो पाती है।

विपणन एवं नेटवर्क की सीमाएँ : उत्पादों के बाजार में पहुँच सीमित होने की वजह से किसानों को उचित मूल्य नहीं मिल पाता है।

निष्कर्ष : सहकारिता आंदोलन ने ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, रोजगार निर्माण और आर्थिक आत्मनिर्भरता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कई चुनौतियों के बावजूद सरकार द्वारा नई नीतियाँ, प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता से सहकारी क्षेत्र को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

कविता

श्री भव्य जैन
प्रबंधक (वायु यातायात प्रबंधन)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

नीलगगन का सजग वो प्रहरी

पर फैलाये आसमान में, जहाज अनेकों उड़ते हैं,
सोचा कभी, है जादू कैसा- आपस में ना भिड़ते हैं?

इस संभावित खतरे की गुत्थी- कौन भला सुलझाता है?
कौन दिशा, किस राह है जाना- कौन उन्हें बतलाता है?

खुद नेपथ्य में रहकर हर पल- उनको मार्ग दिखाता है,
सुरक्षा सहित सेवा कर अर्पण, अपना धर्म निभाता है…

घनघोर बरसती मेघा हो- या आसमान में लाली हो,
हो रविवार का दिन चाहें, चाहें होली-ईद-दिवाली हो,

आपातकाल की बेला हो, या Turbulence के झटकें हों,
या खराब मौसम के चलते जहाज मार्ग से भटकें हों,

यहाँ हर क्षण है रोमांच नया- हर दिन दूजे से हट कर है,
पर सजग वो प्रहरी नीलगगन का- हर दिन सेवा में तत्पर है...

दुर्गम निर्णय, एकाग्र निरीक्षण- और धीरज का परिचायक है,
वो वायु यातायात नियंत्रक- इस व्योम का सच्चा नायक है...!

कविता

गौरव गोयल
सहायक महाप्रबन्धक (वायु यातायात प्रबंधन)
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, प्रयागराज

"वियोग के दिन"

जब सूरज लगा, आसमाँ की दहलीज़ चूमने,
स्नानोपरान्त, मैं घर से निकला तब घूमने।
सुदूर पर्वतों से, प्रतीत हो रही एक अजीब सी छवि, विश्वास न हुआ, जागृत हुआ मेरे भीतर का कवि।
समीप जाते हुए, शीर्षोपरि हो चला था सूरज, चलते-चलते हुआ दिक्भ्रम, कहाँ पश्चिम कहाँ पूरब ?
जैसे-तैसे किसी तरह, मैं पहुँचा वहाँ जब, हर्षाकुल हुआ दृश्य देखकर, मेरा हृदय तब।
आशचर्य हुआ देख, सामने थी एक श्वेतंबरी बाला, क्रीडा करती संग हिरनों के, पहनी रमणीय पुष्पमाला।
उसे देखते साथ, टिक गयी मेरी नजर,
ना देखा किधर हूँ मैं, और वो है किथर?
चाँदनी काया पर थी पड़ रही, एक सुनहरी किरण, जिसकी परावर्तित छवि ही, सुदूर थी प्रसरित हर क्षण।
इतने में वह स्वयं ही, मेरी तरफ आने लगी, देख मुझे अधखिले पुष्प भांति शर्माने लगी।
गया समीप, व पूछा उस कोमलांगी से,
नाम तुम्हारा क्या, व कहाँ की हो तुम मल्लिका ?

पलके झुकाती श्वेतांचल लहराती बोली,
समीप ग्राम में है सदन, नाम - मधूलिका।
नैनों के संग वाणी में भी, उसके असीम था प्यार, विस्मृत हुआ उसे देख, मुझे सम्पूर्ण संसार।
झनझना चुकी थी करणों में उसके पायल की गूंज, सच, खो चुका था, मैं अपना सारा सूझ-बूझ।
उसे देख ज्ञात नहीं, क्यों हुआ हृदय बेचैन, नैनों के गर्त में गुम हुए, एक दूसरे के नैन।
जब किया मैंने उससे अपने प्रेम का इजहार,
ज्ञातव्य था शायद मैं उसे, न किया उसने इनकार।
मेरा हृदय तब प्रेम-शिखर पर जाने का कर रहा था, साथ ही मेरे हृदय में प्रेम-पुष्प पुनर्जागृत हो रहा था।
हो गया शीघ्र ही मैं उसके प्रेम में घायल, मेरे शरीर से जब, स्पर्श हुए उसके करकमल।
सुनकर मेरे मुख पर, प्रणय-प्रेम की सच्ची बानी, दिया प्रेमवत् मुख पर, प्रेम की प्रेमभरी निशानी।
वादियाँ थी हँसी, मास था माघ,
दोनों का हृदय था, हो रहा बाग-बाग।
संग उसके रहते तब, विस्मृत हुआ अतीत,
इसी क्रम में अब, सायंकाल भी गया बीत।
उसने कहा – है जाना मुझे, हो रही अब रात, मैंने पूछा- तो बोलो, कब अगली मुलाकात ?
थोड़ी देर के लिये, तब वह वहाँ ठहरी,
नैन झुकाए तब ली, उसने एक श्वास गहरी।
नैनों में अश्क लिये, वह वहाँ से चली गयी, जाता देख मुरझा प्रेम की अधखिली कली गयी।....
... आज भी वह पायल गुञ्जन मेरे करणों में गूँजती है, हृदय है बेचैन, मुझे, अब कुछ भी ना सूझती है।
मानो खो गया है जीवन का एक अनमोल खजाना, समाप्त है मेरा अब कहीं भी आना-जाना।
सम्पूर्ण जीवन करूँगा व्यतीत, लेकर उसकी यादें, करता रहूँगा आजीवन, उसके लिये फरियादें।
काश! मैं उस बाला से कभी मिला ना होता,
उसे पूर्णरूपेण अपना बनाया ना होता।
दिन भर तो उसके विचार, हृदय में हैं पनपते; रात्रि में भी स्वप्न में आकर, कोई सताया ना होता।
सोचता हूँ शायद! समझ न सकी, वो मेरा अनोखा प्यार, इस भरी दुनियाँ में छोड़ अकेला, करके मुझे बीमार।
छोड़कर तो चली गयी, स्वयं तो अपने द्वार, भुगत रहा हूँ मैं अकेला ही, यूँ सम्पूर्ण संसार॥
हृदय नहीं लगता, मेरा कहीं भी उसके बिन,
दृष्टव्य न होते ये, श्यामवर्णी *"वियोग के दिन"*।

कविता

मोहम्मद नाज़िश
प्रबंधक (सीएनएस)

ए ए आई का संकल्प

आसमा को महफ़ूज़ रखेंगे ये आसमा से वादा है
हर शख़्स को हिफ़ाज़त से घर पहुँचाने का इरादा है

ए आकाश के परिंदे तु अपनी उड़ान भर
जहाँ हो ज़रूरत तू हमसे वी एच एफ़ से बात कर

समुंदर की गोद में हो तू, तो मत हो परेशान
वहाँ एचएफ़ है ना, उसने ले रखी है कमान

तू हमारी नज़रों से कभी ओझल हो नहीं सकता
मत घबरा राडार है ना, तू कहीं खो नहीं सकता

तु गुमराह नहीं होगा तुझे रास्ता दिखायेंगे
नैव- एड्स से तुझे तेरी मंजिल तक पहुँचाएंगे

तू रनवे पे दे दस्तक चाहे कोहरा हो या तूफ़ान
आई एल एस खड़ा है यहाँ पे सीना तान

तेरी पंखों पे बैठा हर शख़्स ये कहेगा
ए ए आई से देश का सर हमेशा ऊँचा रहेगा
ए ए आई से देश का सर हमेशा ऊँचा रहेगा

कविता

श्री राम गोपाल,
पदनाम : फोरमैन, एनएईएल,
नैनी , प्रयागराज

मेरा NAeL परिवार

HCL से जन्म हुआ है, NAeL है आया।
एक फरवरी दो हजार सत्रह, दिवस खास यह मन को भाया ।।

राष्ट्र समर्पित भाव बसाए, इक सौ पच्चीस कर्मचारी ।
था जुनून बस उनकी आँखों में, कर ली थी उसकी तैयारी ।।
नई कंपनी से जुड़ने का , नया कर्म उत्तम है लाया ।।
HCL से जन्म हुआ है, NAeL है आया ।।

प्रतिभावान सभी थे ऐसे, हृदय चेतना अरु गुणवत्ता ।
नई कंपनी में आकर के, दिखा दिए सब अपनी सत्ता ।
कर्मठता उनकी जब देखी, तब एच ए एल भी हर्षाया ।।
HCL से जन्म हुआ है, NAeL है आया ।।

हेलीकॉप्टर लूम ड्रोन सब, हैं गुणवत्ता वाले बनते ।
कर्म क्षेत्र में सफल सभी हैं, ये प्रतिभा से आगे बढ़ते ।।
कथनी करनी भेद नहीं था, अति वैभवशाली है साया ।
HCL से जन्म हुआ है, NAeL है आया ।।

आया पल सेवा निवृत्ति का, माहवार यह है होता ।
साथ बिताये पल को सारे, मुश्किल से वह आज पिरोता ।।
रघुवर कृपा रहे सब जन पर, स्वस्थ सदा हो यह काया ।।
HCL से जन्म हुआ है, NAeL है आया ।।

जहाँ रहें खुशहाल रहें सब, यही प्रार्थना हैं करते।
सुखी रहे परिवार सभी का, आशा यह मन में धरते ।।
मंगलकारी जीवन हो बस, हो प्रभु वर की अनुपम माया ।
HCL से जन्म हुआ है, NAeL है आया ।।

आनंद उपाध्याय
सहायक महाप्रबंधक (एटीसी)
भाविप्रा, सीएटीसी, प्रयागराज

कौशाम्बी - प्राचीनता और श्रद्धा का संगम

कुछ यात्राएँ पूर्व निर्धारित नहीं होतीं, वे अनायास बनती हैं और धीरे-धीरे अपने भीतर छिपी कहानियों को खोलती चली जाती हैं। प्रयागराज के समीप स्थित कौशाम्बी की हमारी यात्रा भी ऐसी ही थी – एक अचानक बना विचार, जिसने हमें इतिहास की गहराइयों और अध्यात्म की शांत गलियों में ले जाने का रास्ता दिखाया। यह सिर्फ़ दर्शनीय स्थलों का भ्रमण नहीं था, बल्कि हर क़दम पर सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को महसूस करने का एक अनमोल अवसर था। इन यात्राओं में मेरे **सच्चे मित्र और बड़े भाई जैसे यात्रा-सहयोगी प्रशांत भाई** हमेशा मेरे साथ होते हैं, जो मुझे ऐसे सभी अनुभवों के लिए प्रेरित करते हैं।

अनायास बनी यात्रा: कौशाम्बी की पहली दस्तक

रविवार दोपहर के 12:30 बजे अचानक कौशाम्बी जाने का विचार कौंधा, और 3 बजे निकलने का कार्यक्रम बन गया। कुछ ज़रूरी कामों के चलते भले ही हम 30 मिनट की देरी से (3:30 बजे) रवाना हुए, पर **प्रशांत भाई की स्नेह-भरी "उलाहना"** ने पूरे रास्ते हमारा मनोरंजन किया! एक छोटे से मार्ग भटकाव के बावजूद, लगभग 55 किलोमीटर की दूरी हमने सवा घंटे में तय की। उबड़-खाबड़ रास्तों के बावजूद, ग्रामीण नज़ारे मनमोहक थे, और यात्रा का हर पल आनंद से भरा था।

हमारी पहली कौशाम्बी यात्रा में हमने देखा:

- **शयन चित्ति स्थल:** वैदिक काल की आहुतियों की स्मृति में बना यह शांत और दिव्य स्थान हमें प्राचीन भारतीय संस्कृति से जोड़ता है।
- **घोषिताराम विहार:** यह वह पवित्र भूमि है जहाँ भगवान बुद्ध के चरण पड़े थे और उनके उपदेश गूंजे थे। यहाँ की शांति हमें एक अलग ही युग में ले जाती है।
- **दिगम्बर जैन मंदिर:** आस्था और शांति का संगम, जो जैन धर्म की गहरी जड़ों को दर्शाता है।
- **अशोक स्तम्भ:** सम्राट अशोक के धर्म संदेशों को शिलाओं में अंकित यह स्तम्भ, भारत के गौरवशाली इतिहास का मूक गवाह है।

- **राजा उदयन किला:** कभी राजसी वैभव का प्रतीक रहा यह किला अब भले ही खंडहर में तब्दील हो गया हो, पर यहाँ खड़े होकर राजा उदयन के शौर्य और प्राचीन राज्य की कल्पना करना एक अद्भुत अनुभव था।

अंतिम स्थल राजा उदयन किले को देखते-देखते अंधेरा छा गया था। प्रभासगिरि जैन तीर्थ तक जाना संभव नहीं हो सका, क्योंकि मठ के रक्षक ने रात में ऊपर जाने से मना कर दिया। तभी हमने तय कर लिया था कि हमारी अगली यात्रा की शुरुआत यहीं से होगी।

कौशाम्बी की अधूरी कहानी: दूसरा अध्याय

"क्रमशः" – यह सिर्फ़ एक शब्द नहीं, हमारी कौशाम्बी यात्रा के दूसरे अध्याय की हकीकत बन गया। अधूरी रही कौशाम्बी यात्रा को पूरा करने का संकल्प था, और संयोग से अगला ही रविवार अनुकूल रहा। दोपहर 1:15 बजे, प्रशांत भाई (जो इस बार पीले कुर्ते में थे, मेरी पिछली यात्रा के "ऐतिहासिक लाल कुर्ते" से स्पर्धा करते हुए!) और मैं (इस बार भगवा कुर्ते में सजधजकर तैयार) फिर से कौशाम्बी की राह पर थे।

जो स्थान पिछली बार छूट गए थे, इस बार उन्हें न केवल देखा, बल्कि दिल से जिया। कौशाम्बी की धरती पर इतिहास हर क़दम पर साँस लेता है – यहाँ की स्थापत्य की शांति, प्रकृति की गोद, और सदियों पुरानी कहानियों की गूंज, सब कुछ हमने गहराई से अनुभव किया।

प्रभासगिरि: जहाँ इतिहास और किंवदंतियाँ जीवंत हो उठती हैं

हमारी इस यात्रा का वास्तविक आकर्षण **प्रभासगिरि जैन तीर्थ** था। यहाँ तक पहुँचने के लिए 200 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं, और पास ही स्थित राधा-कृष्ण मंदिर तक पहुँचने के लिए 300 सीढ़ियाँ। प्रशांत भाई ने मेरे "वज़न" को लेकर हल्की-फुल्की छेड़छाड़ की, लेकिन दृढ़ निश्चय और भगवा रंग के उत्साह ने साबित कर दिया – मोटा हो या दुबला, अगर मन में दृढ़ता हो, तो कोई भी बाधा पहाड़ जैसी नहीं लगती!

ऊपर पहुँचकर हमें रामचरण जैसा एक नन्हा ग्रामीण गाइड मिला, जिसकी मासूमियत और फुर्ती ने हमारी यात्रा को और भी अद्भुत बना दिया। सबसे अविस्मरणीय भेंट हुई **गौरी महाराज जी** से, जो स्वयं महर्षि दधीचि के वंशज हैं। उन्होंने प्रभासगिरि और कौशाम्बी से जुड़ी दुर्लभ कहानियाँ सुनाईं, जो शायद ही किसी किताब में

मिलें। उनके द्वारा सुनाई गई कथाएँ इस स्थान के ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व को एक नया आयाम दे गईं। दर्शन, आशीर्वाद और कुछ दिलकश फ़ोटोशूट के बाद, वापसी की राह और भी सरल महसूस हुई।

लौटते समय, हमें कंबोडियन बुद्धिस्ट मॉनेस्ट्री का मुख्य मंदिर भी खुला मिला, जो पिछली बार बंद था। वहाँ का दृश्य वाकई मन मोह लेने वाला था, इसकी अनूठी वास्तुकला और शांत वातावरण ने हमें भीतर तक प्रभावित किया।

यात्रा का सुखद समापन: अनुभव अनमोल

कौशाम्बी की यह दो-भागों वाली यात्रा हमें अपनी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक जड़ों से और भी गहराई से जोड़ गई। शयन चित्ति स्थल से लेकर राजा उदयन किले और प्रभासगिरि तक, हर स्थान ने अपनी एक अनूठी कहानी सुनाई। यह यात्रा सिर्फ़ स्थलों को देखने की नहीं, बल्कि इतिहास को महसूस करने, अध्यात्म में डूबने और कुछ अनमोल अनुभवों को सहेजने की थी।

गाड़ी में गज़लें सुनते हुए, मुँह में **पान** का स्वाद और दिल में तृप्ति के साथ हमारी यह यात्रा पूर्ण हुई। कभी-कभी अचानक निकली यात्राएँ सबसे यादगार होती हैं, और यह यात्रा इसका एक जीता-जागता प्रमाण है। कुर्ता भले ही लाल या भगवा रहा हो, पर कौशाम्बी के अनुभव सचमुच अनमोल थे। यह हमारे यात्रा-गाथा में एक और स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया है।

विनीत कुमार,
केमिस्ट,
पावरग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, प्रयागराज

मेरी गोवा यात्रा

गोवा की यात्रा अपने आप में एक अद्भुत यात्रा थी। एक बार मुझे 2001 में गोवा की यात्रा करने का अवसर मिला। उस समय मैं स्नातक पूरा करके अपनी टेक्निकल शिक्षा प्राप्त कर रहा था। रोजगार के लिए अथक प्रयास चल रहा था ,किन्तु अभी तक सफलता कोषों दूर थी। पैसे के अभाव मे घर से अधिक निकलने का अवसर नहीं मिल पाया था। घूमने की इच्क्षा तो मन मे हिलोरें जरूर मारती थी ।पर अभी तक वह अवसर मिला नहीं था। मेरे चचेरे भाई गोवा में जॉब करते थे। अचानक चाची जी को मुझे गोवा छोड़ने जाने का अवसर मिला। गोवा के साथ-साथ मुझे एस एस बी के टेस्ट के लिए कोयंबटूर भी जाना था।

मेरी यह यात्रा बहुत संक्षिप्त थी। गोवा में मुझे मुश्किल से 2 दिन और एक रात रुकने का अवसर मिला। मैं कानपुर से अपनी यात्रा शुरू करके मडगांव होते हुए गोवा पहुंचा। रास्ते मे भुसावल के केले खाने का आनंद भी मिला। रास्ते में कई सारी सुरंगें मिली ।कोंकण रेलवे ने चट्टानें काट-काटकर रेलवे ट्रैक बनाया था। सुरंगें और आसपास का घना जंगल यात्रा को और खूबसूरत बना रहा था ।जब ट्रेन सुरंग के अंदर चली जाती थी तो ऐसा लगता था कि दिन में रात हो गई।ट्रेन का सुरंग मे जाना मेरी यात्रा के रोमांच को दोगुना कर रहा था। रास्ते में कई बार बारिश भी हुई।

मैं पहली बार उत्तर प्रदेश छोड़कर किसी दूसरे राज्य की यात्रा कर रहा था। मेरे लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं था। नजदीक से समुद्र देखने का उतावलापन ना जाने कितने सवाल मेरे मन में पैदा कर रहा था। गांव की नदियों, तालाबों के अलावा मैंने समुद्र कभी भी नहीं देखा था। रास्ते में एक मजेदार घटना घटी। ट्रेन को सिग्नल नहीं मिल रहा था और ट्रेन खड़ी हुई थी। पहली बार मैंने नारियल के बगीचे को इतनी पास से देखा था। उत्सुकतावश मैं नारियल के बगीचे में जो कि रेलवे ट्रैक से बहुत ही नजदीक था। वहां पर एक टूटा हुआ नारियल पड़ा था, मैं उसे लेने जैसे ही बगीचे के अंदर घुसा, वहां पर पहले से बैठे हुए कुत्ते ने मुझे दौड़ा लिया।

मैं एक एक स्पोर्ट पर्सन हूं ,मैं दौड़कर जल्दी से ट्रेन में आकर चढ़ गया ।कुत्ता मेरा पीछा करते-करते मेरे पीछे आ गया क्योंकि मैं ट्रेन में ऊपर चढ़ गया था तो भौंकने के अलावा उसके पास कोई विकल्प नहीं था। उसके बाद में कुत्ते को चिढ़ा रहा था कि ऊपर आओ और काट लो। खैर ट्रेन को सिग्नल मिला और ट्रेन आगे बढ़ी। लगभग डेढ़ दिन थका देने वाली यात्रा के पश्चात सुबह-सुबह ट्रेन वास्को पहुंची। जहां पर मेरे भाई जी पहले से ही मेरा इंतजार कर रहे थे। सारा सामान उतारने के पश्चात हम टैक्सी लेकर अपने भैया के घर पहुंचे। ट्रेन में नींद पूरी न होने के कारण मैं दिन भर सोया।

शाम को भैया ने कहा कि अगली सुबह तुम गोवा घूमने जा रहे हो। भैया ने जब बताया कि तुम बस से गोवा घूमने जा रहे हो ,तो चाची ने जल्दी से कुछ खाना टिफिन में बना दिया ।मैंने बैग में एक जोड़ी कपड़े डाले किंतु सबसे जरूरी सामान टॉवल डालना मैं भूल ही गया।अगले दिन सुबह-सुबह भैया मुझको एक होटल के पास ले गए वहां पर एक बस खड़ी हुई थी।

भैया ने मुझे बताया कि इस बस में बैठ जाओ और यह गोवा के प्रसिद्ध स्थान में आपको घूमाने ले जाएगी। बस मे जाने का भुगतान भैया ने कर दिया था। मुझे खाली बस मे बैठकर यात्रा का मज़ा लेना था।भैया ने बताया कि शाम को यह बस आपको इसी होटल के पास छोड़ देगी। होटल के पास आने के बाद आप घर वापस आ जाना।

बस जब पहले बीच में पहुंची तो मैं बस में ही बैठा रहा क्योंकि मुझे डर था कि कहीं बस मुझे छोड़ कर चली न जाए। बस एक बीच में 1 घंटे के लिए रुकती थी।पास में टॉवल भी नहीं था इस कारण समुद्र में नहाने की इच्छा लिए मैं बस में ही बैठा रहा। किंतु जब दूसरे बीच में बस पहुंची तो मेरे मन मे एक ख्याल आया कि पता नहीं दुबारा गोवा आना हो कि न हो ,बस यही सोंचकर मैं तुरंत जाकर समुद्र में नहाने लगा और लगभग 15 मिनट पहले मैं बाहर निकल आया। समुद्र किनारे तेज हवा चलने के कारण मेरे कपड़े जल्दी सूख जाते थे।उसके बाद तो मैंने हर एक बीच मे स्नान किया और 15 मिनट पहले मैं नहाकर पानी से बाहर निकाल आता था।

जब पहली बार मैंने खारे पानी का स्वाद चखा वह आज भी अविस्मरणीय है। आज भी मुझे वो पल याद है। पॉकेट में पैसे का अभाव और अनजान शहर मे मेरे पास इधर-उधर का खाने-पीने व घूमने का विकल्प बहुत कम था। खाने के नाम पर वैसे भी चावल और मछली मिल रही थी जो मुझ जैसे शाकाहारी के लिए बिलकुल भी विपरीत परिस्थितियाँ पैदा कर रही थी।लोग क्रूज में जा रहे थे पर मैं अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण किए हुए था। आखिरकार मेरी इच्छाओं ने मुझे एक स्टीमर की सवारी करवा ही दी। समुद्र के पानी में जाकर मैं सोच रहा था कि कहीं कोई अनहोनी हो गई तो मैं तैर कर किनारे पहुंच जाऊंगा या नहीं क्योंकि मैंने गाँव कि नदियों मे खूब तैराकी की हुई है। बस ऐसे स्थान में गई जहां पर बहुत सारे बॉलीवुड मूवीज की शूटिंग भी हुई थी।

गोवा के चर्च ,बीच और फिल्मी शूटिंग वाले स्थानों के अलावा हमने गोवा कि जेल भी देखी।एकदम समुद्र के किनारे ।यदि कोई भागने का प्रयास करे भी तो वो उसका अंतिम प्रयास शाबित हो। साउथ गोवा व प्रसिद्ध बीच में घूमने के पश्चात शाम को बस ने हमें उसी होटल के पास उतार दिया। मैं पता पूछते पूछते भैया को फोन करके उनके घर में पहुंचा क्योंकि मेरे भ्राता श्री मुझे बस मे बैठाने तो आए थे लेकिन लेने नहीं आए थे। उसी रात को मैं बेरोजगार से रोजगार होने का सपना लिए और एक बार फिर से गोवा भ्रमण की इच्छा के साथ-साथ एस -एस बी का टेस्ट देने के लिए कोयंबटूर के लिए रवाना हो गया।

प्रतिनिधि रचनाएँ

पर्यावरण

थोड़ी धरती पाऊँ

बहुत दिनों से सोच रहा था,
थोड़ी धरती पाऊँ
उस धरती में बाग़-बग़ीचा,
जो हो सके लगाऊँ।
खिलें फूल-फल, चिड़ियाँ बोलें,
प्यारी ख़ुशबू डोले
ताज़ी हवा जलाशय में
अपना हर अंग भिगो ले।
लेकिन एक इंच धरती भी
कहीं नहीं मिल पाई
एक पेड़ भी नहीं, कहे जो
मुझको अपना भाई।

हो सकता है पास, तुम्हारे
अपनी कुछ धरती हो

फूल-फलों से लदे बग़ीचे
और अपनी धरती हो।

हो सकता है छोटी-सी
क्यारी हो, महक रही हो

छोटी-सी खेती हो जो
फ़सलों में दहक रही हो।

हो सकता है कहीं शांत
चौपाए घूम रहे हों
हो सकता है कहीं सहन में
पक्षी झूम रहे हों।
तो विनती है यही,
कभी मत उस दुनिया को खोना
पेड़ों को मत कटने देना,
मत चिड़ियों को रोना।

एक-एक पत्ती पर हम सब
के सपने सोते हैं

शाख़ें कटने पर वे भोले,
शिशुओं सा रोते हैं।

पेड़ों के संग बढ़ना सीखो,
पेड़ों के संग खिलना
पेड़ों के संग-संग इतराना,
पेड़ों कं संग हिलना।

बच्चे और पेड़ दुनिया को
हरा-भरा रखते हैं
नहीं समझते जो, दुष्कर्मों
का वे फल चखते हैं।

आज सभ्यता वहशी बन,
पेड़ों को काट रही है

ज़हर फेफड़ों में भरकर
हम सब को बाँट रही है

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

प्रतिनिधि रचनाएँ

किसान

नहीं हुआ है अभी सवेरा,
पूरब की लाली पहचान,
चिड़ियों के जगने से पहले,
खाट छोड़ उठ गया किसान।
खिला-खिलाकर बैलों को ले,
करने चला खेत पर काम,
नहीं कभी त्योहार न छुट्टी,
उसको नहीं कभी आराम।
गर्म-गर्म लू चलती सन-सन,
धरती जलती तवे समान,
तब भी करता काम खेत पर,
बिना किए आराम किसान।

बादल गरज रहे गड़-गड़-गड़,
बिजली चमक रही चम-चम,
मूसलाधार बरसता पानी,
ज़रा न रुकता लेता दम।
हाथ-पाँव ठिठुरे जाते हैं,
घर से बाहर निकले कौन,
फिर भी आग जला, खेतों की,
रखवाली करता वह मौन।
है किसान को चैन कहाँ,
वह करता रहता हरदम काम,

सोचा नहीं कभी भी उसने,
घर पर रह करना आराम।

सत्यनारायण लाल

प्रतिनिधि रचनाएँ

जी होता, चिड़िया बन जाऊँ!

जी होता, चिड़िया बन जाऊँ!
मैं नभ में उड़कर सुख पाऊँ!
मैं फुदक-फुदककर डाली पर,
डोलूँ तरु की हरियाली पर,
फिर कुतर-कुतरकर फल खाऊँ!
जी होता चिड़िया बन जाऊँ!
कितना अच्छा इनका जीवन?
आज़ाद सदा इनका तन-मन!
मैं भी इन-सा गाना गाऊँ!
जी होता, चिड़िया बन जाऊँ!
जंगल-जंगल में उड़ विचरूँ,
पर्वत घाटी की सैर करूँ,
सब जग को देखूँ इठलाऊँ!
जी होता चिड़िया बन जाऊँ!
कितना स्वतंत्र इनका जीवन?
इनको न कहीं कोई बंधन!
मैं भी इनका जीवन पाऊँ!
जी होता चिड़िया बन जाऊँ!

सोहन लाल द्विवेदी

प्रेरक कविता

प्रतिनिधि रचनाएँ

जलाते चलो

जलाते चलो ये दीए स्नेह भर-भर
कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा!

भले शक्ति विज्ञान में है निहित वह
कि जिससे अमावस बने पूर्णिमा-सी,

मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में
घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।

बिना स्नेह विद्युत-दीए जल रहे जो
बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।

जला दीप पहला तुम्हीं ने तिमिर की
चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी।

तिमिर की सरित पार करने, तुम्हीं ने
बना दीप की नाव तैयार की थी।
बहाते चलो नाव तुम वह निरंतर
कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा।

युगों से तुम्हीं ने तिमिर की शिला पर
दीए अनगिनत है निरंतर जलाए

समय साक्षी है कि जलते हुए दीप
अनगिन तुम्हारे, पवन ने बुझाए

मगर बुझ स्वयं ज्योति जो दे गए वे
उसी से तिमिर को उजाला मिलेगा।

दीए और तूफ़ान की यह कहानी
चली आ रही और चलती रहेगी

जली जो प्रथम बार लौ उस दीए की
जली स्वर्ण-सी है, और जलती रहेगी।

रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि
कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा।

जलाते चलो ये दीए स्नेह भर-भर
कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा!

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

श्री सत्यन कुमार,
उप महाप्रबंधक (एटीएम),
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज

पिकबैनी

गले में स्कूलबैग लटकाए जब मैं विद्यालय की ओर निकलता हूँ तो प्रायः हवा अपनी स्मृति के रंगों से, पत्तों-फूलों से सड़क पर ललितकला उकेरती दिखती है। बुलबुल की आवाज सुन जब तक पेड़ पर उसे खोज लूँ , एक दूसरी चिड़िया की अनवरत आवाज गूंजने लगी है। अरे ! यह तो गिलहरी है। मुझे तो पता भी न था कि यह चिड़ियों की आवाज में बोलती है।इस आश्चर्य को क्लास के बच्चों को दिखाऊँगा आज। यह निश्चय कर आगे बढ़ता हूँ तो देखता हूँ कि एक पुराने पीपल के पेड़ की फुनगी झूम रही है , जबकि अन्य पेड़ पूरी तरह शांत हैं। यह कैसे ? अरे वाह ! कुछ चिड़िया फुनगी के उन डालों पर लुका-छिपी खेल रही हैं। चैत्र के इस महीने में पीपल के पत्ते इतने सुकोमल और लाल हैं मानो उसने निकट स्थित टेसू के रंग और शिरीष पुष्पों की कोमलता चुरा ली हों। संगत का असर तो होगा ही – कबीर और तुलसी ने यूं ही थोड़े कहा है।सड़क किनारे दोनों ओर घास के छोटे- छोटे सुंदर सफ़ेद फूल दिखते हैं। कुछ दूरी पर सागवान के ढेर सारे पेड़ कतार में खड़े हैं। घास पर गिरे उनके सूखे पत्तों के नीचे उसी रंग की कचबचिया जाने क्या खोज रही है चिल्ला- चिल्ला कर। आगे बढ़ने पर हरसिंगार का पेड़ दिखता है। कुछ दिनों पहले इसके नीचे सफ़ेद-नारंगी रंग के छोटे – छोटे फूल बिखरे रहते थे। माँ अक्सर इसे चुन कर ले जाती थी । रास्ते में ढेर सारे नीम के पेड़ भी हैं जिनकी छतों पर अलसाई हुई धूप सोयी रहती है, नीचे उतरने का नाम ही नहीं लेती। आगे फिर एक पेड़ के नीचे ढेर सारे सफ़ेद फूल बिखरे हुए हैं। कल इनमें से एक फूल मैंने उठा कर सूंघा था और खुश हो कर अपनी जेब में रख लिया था। तीव्र खुशबू से दिन भर मन सुंदर – सुगंधित बना रहा। आज फिर मैंने एक फूल उठा कर रख लिया है। लगता है इस पेड़ से मेरी गहरी मिताई हो गयी है। आज जो भी इस पेड़ के नीचे से गुजरेंगे, सभी के मन इसी फूल से खिल उठेंगे।

साइकिल से गुजरता हुआ एक बच्चा मुझे अपने साथ आने का आमंत्रण देता है। मैं मना कर देता हूँ। पैदल चलते हुए प्रकृति को निहारना मुझे बड़ा अच्छा लगता है।अपने पंखों से ताली बजाती हुई एक चिड़िया ऊपर उड़ती जा रही है। उड़ते हुए बगुले देवदूतों से दीख पड़ते हैं। चील उड़ती नहीं , मानो नभ – नदी में हवाओं संग बहती जा रही है।शमी के पौधे पर एक छोटी पतरंगी चिड़िया उलट कर जाने क्या खा रही है। उसका साथ देने जाने कहाँ से एक गौरेया आ गयी है। मानो मेरे मन की किताब के पन्नों से निकल कर एक तितली प्रकट हो गयी हो , मेरे साथ –साथ चल रही है। चल नहीं , उड़ रही है मानो मुझे विद्यालय का पता बता रही हो। यदि मैं लड़की होता तो अपने दुपट्टे को परियों के पंखों की तरह सजा कर मैं भी उसके साथ उड़ता रहता। महुए की गंध से अब वातावरण महमहाने लगा है। लगता है जंगल वाला रास्ता निकट आ गया है।

विद्यालय जाने के लिए एक छोटा रास्ता भी है , छोटे किन्तु घने जंगल से गुजरता हुआ। इस जंगल के बीचों- बीच एक दुबली – पतली पगडंडी रहती है। मुझे देखते ही वह पगडंडी मेरे स्वागत में चहक उठती है। लगता है, इस निर्जन वन में वह मेरा रोज इंतजार करती है। जंगल के अंत तक मेरे साथ चलती रहती है। विदाई के समय मैं उसकी ओर नहीं देखता। डर लगता है, कहीं मुझे रुक जाने न कह दे।पगडंडी के दोनों ओर आंवले के पेड़ लगे हुए हैं।उड़ता हुआ एक मोर सर के ठीक ऊपर से गुजर जाता है। एक क्षण का भय खुशी में बादल जाता है। माँ कहती है-यह साँपों को खा जाता है। घर में एक दिन छोटा – सा साँप निकला था। माँ ने बड़ी मुश्किल से उसे भगाया था। खैर , दूर तक जंगल मे पत्तों को झरते देखते मन झूम उठता है, मानो एक विशाल शिवलिंग पर बिल्वपत्रों का अभिषेक हो रहा हो। पत्ते ऐसे गिरते दीख पड़ते हैं मानो धीरे- धीरे हवा की सीढ़ियों से उतर रहे हों। 'कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ' फिर एक टेसू का पेड़ दीख पड़ता है। इसे ब्रह्मपुष्प या आग के फूल भी कहते हैं । धूप रंगी अपने नीचे की धरती से अब तक होली खेल रहा है । शायद वर्ष भर से प्रतीक्षा कर रहा होगा इस मौसम की ।लगभग एक महीने तो हमने भी प्रतीक्षा की थी होली की। जितनी बड़ी प्रतीक्षा , उतना बड़ा सुख।

रंग – बिरंगे फूलों की क्यारियाँ ! बड़े जतन से सींची – संवारी गयी। लगता है , यहीं बैठा रहूँ, विद्यालय जाऊँ ही नहीं ।इनसे जान – पहचान कर लूँ। कितनों के तो नाम भी नहीं जानता। कुछ लोग इसके बड़े – बड़े नाम बताते हैं। बुद्धू हैं , इतने सुंदर फूल का भला उतना बदसूरत नाम कैसे हो सकता है। इससे अच्छा नाम तो हमारे क्लास का सबसे कमजोर लड़का भी बता दे। दोपहर के अंतराल के समय यहाँ घास पर बैठ इन्हें निहारना कितना अच्छा लगता है ! दो आँखें कम पड़ती होंगी , इसलिए सारे अंगों से मैं इन्हें देखता हूँ। आम के पेड़ों के बौर कम होने लगे हैं। कोयल की मीठी कूक खूब सुनाई देती है। कुसुमसायक इन्हीं बौरों की तो प्रत्यंचा बनाता है , कालिदास के किसी नाटक में पढ़ा था। मैं विद्यालय पहुँच गया हूँ। विद्यालय और कुछ नहीं मेरा 'नागर विमानन प्रशिक्षण महाविद्यालय ' है। रास्ते के दृश्य अपने आवास से कॉलेज तक पहुँचने के मध्य रोज अलग – अलग छवियों में मुझे मिलते हैं। साइकिल से जाने वाला बच्चा स्कूटर और कार से जाने वाले मेरे सहकर्मी हैं , जिनके आग्रह को रोज मुझे विनयपूर्वक (आखिर संपादक महोदय का सहपाठी रह चुका हूँ मैं) ठुकराना पड़ता है। मुझे लगता है मैंने अपना बचपन दुबारा पा लिया है। जाने कितने वर्ष चिड़ियों की चहचहाहट सुने, फूलों का पावन सौंदर्य निहारे, उसका सौरभ अपने मन मे बसाए विना गुजर गए। इतनी विपुल सौंदर्यराशि प्रतिपल आंखों के सामने रहती है और हम अंधे-बहरे-गूंगे बने किन-किन काँटों में उलझ कर जीवन गुजार देते हैं। आखिर यह जीवन मेरा है और मुझे ही इसे सुंदर बनाना है। किसी और से हम यह अपेक्षा क्यों रखें।और वह सब सोचने की भी क्या जरूरत। इस क्षण का सौंदर्य ही तो सब कुछ भुला देने के लिए बहुत अधिक है।बहुत कुछ ऐसा ही अहसास मुझे कविता पढ़ते या लिखते वक्त होता है।

कविता की दुनिया में उतरते ही यह सूरज मेरे लिए पृथ्वी की परिक्रमा करने लगता है। प्रयागराज कुंभ के मेले में खोया हुआ मेरा बचपन मुझे मिल जाता है। नदी किनारे तल्लीनता से रेत के घरौंदे बनाते हुए मुझे कई बार सृष्टि की रचना का सौभाग्य मिला है। आत्ममुग्धता के पश्चात अपनी रचना पर असंतुष्ट - विषण्ण होऊं , उसके पहले ही किसी परी की तोतली हँसी अपने नन्हे पगों से चलती हुई मन की उलझी राहों पर कदम रखती है। क्षण भर में सारी राहें सुलझ जाती हैं। फिर वो गायब हो जाती है, शायद किसी उलझनों भरी राहों के गुंजलक में दुबारा मिलने के लिए। यह भी संभव है कि किसी परी की तरह वो हर किसी की इसी तरह मदद कर गायब हो जाती हो। इतना क्या कम है कि बचपन-सी सुकोमल, निश्छल एवं मासूम वो तोतली हँसी आज भी मन को भिंगोती रहती है, मन को ऊंचा उठाती रहती है।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

एक परिचय

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण , नागर विमानन मंत्रालय के अधीन एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है जिसकी स्थापना 1 अप्रैल, 1995 को भारतीय संसद द्वारा पारित के एक अधिनियम के अंतर्गत किया गया है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण 137 विमानपत्तनों का प्रबंधन करता है, जिसमें 23 अंतर्राष्ट्रीय विमानपत्तन (3 अंतर्राष्ट्रीय सिविल एन्क्लेव सहित), 10 सीमा शुल्क विमानपत्तन (4 सीमा शुल्क सिविल एन्क्लेव सहित), 81 घरेलू विमानपत्तन तथा रक्षा वायु क्षेत्रों में 23 घरेलू सिविल एन्क्लेव शामिल हैं। सुरक्षित विमान प्रचालन हेतु भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण सभी विमानपत्तनों एवं 25 अन्य स्थानों पर जमीनी अधिष्ठापनों के साथ संपूर्ण भारतीय वायु क्षेत्र एवं समीपवर्ती महासागरीय क्षेत्रों में वायु ट्रैफिक प्रबंधन सेवाएं (ए टी एम एस) भी प्रदान करता है।

अमृतसर, कालीकट, गुवाहाटी, जयपुर, त्रिवेंद्रम, कोलकाता एवं चेन्नई के विमानपत्तन, जो आज अंतर्राष्ट्रीय विमानपत्तन के रूप में स्थापित हैं, विदेशी अंतर्राष्ट्रीय एयरलाइनों द्धारा भी प्रचालन के लिए खुले हैं। कोयबंटूर, त्रिचुरापल्ली , वाराणसी एवं गया के हवाई अड्डों से अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों के अलावा राष्ट्रीय ध्वज वाहक भी प्रचालन करते हैं। केवल इतना ही नहीं अपितु आज आगरा, कोयबंटूर, जयपुर, लखनऊ, पटना आदि के विमानपत्तनों तक टूरिस्ट चार्टर भी जाते हैं।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने मुम्बई, दिल्ली, हैदराबाद, बंगलौर एवं नागपुर के विमानपत्तनों के उन्नयन के लिए तथा विश्वस्तरीय मानकों से बराबरी करने के लिए पर एक संयुक्त उद्यम भी स्थापित किया है।

भारतीय भू क्षेत्र के ऊपर सभी प्रमुख वायुमार्ग वीओआर / डीवीओआर कवरेज (89 अधिष्ठापन) के साथ रडार द्धारा कवर्ड हैं (11 स्थानों पर 29 रडार अधिष्ठापन) जो दूरी मापन उपकरण के साथ सह-स्थित हैं (90 अधिष्ठापन)। 52 रनवे पर आईएलएस अधिष्ठापन की सुविधा है तथा इनमें से अधिकांश विमानपत्तनों पर नाइट लैंडिंग की सुविधाएं हैं और 15 विमानपत्तनों पर आटोमेटिक मैसेज स्विचिंग सिस्टम लगा है।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्धारा कोलकाता एवं चेन्नई के वायु ट्रैफिक नियंत्रण केंद्रों पर देशज प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके आटोमेटिक डिपेंडेंस सर्विलांस सिस्टम (ए डी एस एस) के सफल कार्यान्वयन ने भारत को दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र में इस उन्नत प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने वाला पहला देश होने का गौरव प्रदान किया जिससे उपग्रह आधारित संचार प्रणाली का प्रयोग करके महासागरीय क्षेत्रों के ऊपर वायु ट्रैफिक का प्रभावी नियंत्रण संभव हुआ है। उपग्रह संचार लिंक के साथ रिमोट कंट्रोल्ड वी एच एफ कवरेज के प्रयोग ने हमारे ए टी एम एस को और मजबूती प्रदान की है। वी-सैट अधिष्ठापनों द्धारा 80 स्थाननों को जोड़ने से बड़े पैमाने पर वायु ट्रैफिक प्रबंधन में वृद्धि होगी और बदले में एयरक्राफ्ट के प्रचालन की सुरक्षा में वृद्धि होगी। इसके अलावा,

हमारे वृहद एयरपोर्ट नेटवर्क पर प्रशासनिक एवं प्रचालनात्मक नियंत्रण संभव होगा। मुम्बई, दिल्ली एवं प्रयागराज (इलाहाबाद) के विमानपत्तनों पर निष्पादन आधारित नेविगेशन (पीएनबी) प्रक्रिया पहले ही कार्यान्वित की जा चुकी है तथा अन्य विमानपत्तनों पर चरणबद्ध ढंग से इसको लागू करने की संभावना है।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने भारतीय अंतरिक्ष एवं अनुसंधान केंद्र (इसरो) के साथ प्रौद्योगिकीय सहयोग से गगन परियोजना शुरू की है जहां नेविगेशन के लिए उपग्रह आधारित प्रणाली का प्रयोग किया जाएगा। इस प्रकार जीपीएस से प्राप्त नेविगेशन के संकेतों को हवाई जहाजों की नेविगेशन संबंधी आवश्यकता को पूरा करने के लिए उन्नत किया जाएगा। प्रौद्योगिकी प्रदर्शन प्रणाली का पहला चरण फरवरी 2008 में पहले ही सफलतापूर्वक पूरा हो गया है। प्रचालनात्मक चरण में इस प्रणाली को स्तरोन्नत करने के लिए विकास टीम को सक्षम बनाया गया है।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने दिल्ली एवं मुम्बई के विमानपत्तनों पर ग्राउंड बेस्ड ऑगमेंटेशन सिस्टम (जी बी ए एस) उपलब्ध् कराने की भी योजना बनाई है। यह जीबीएएस उपकरण हवाई जहाजों को श्रेणी-2 (वक्र एप्रोच) लैंडिंग सिगनल उपलब्ध कराने और इस प्रकार आगे चलकर लैंडिंग सिस्टम के विद्यमान उपकरण को प्रतिस्थापित करने में समर्थ होगा, जिसकी रनवे के प्रत्येक छोर पर जरूरत होती है।

दिल्ली में अधिष्ठापित एडवांस्ड सर्फेस मूवमेंट गाइडेंस एंड कंट्रोल सिस्टम (ए एस एम जी सी एस) ने रनवे 28 के प्रचालन को कैट-3 ए स्तर से कैट-3 बी स्तर तक स्तरोन्नत किया है। कैट-3 ए सिस्टम 200 मीटर की विजिबिलिटी तक हवाई जहाजों की लैंडिंग को अनुमत करता है। तथापि, कैट-3 बी 200 मीटर से कम किंतु 50 मीटर से अधिक की विजिबिलिटी पर हवाई जहाजों की सुरक्षित लैंडिंग को अनुमत करेगा।

'ग्राहकों की अपेक्षाएं' पर अधिक बल के साथ भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के प्रयास को उस स्वतंत्र एजेंसी से उत्साहवर्धक प्रत्युत्तर मिला है जिसने 30 व्यस्त विमानपत्तनों पर ग्राहक संतुष्टि सर्वेक्षण संचालित किया है। इन सर्वेक्षणों ने हमें विमानपत्तनों के प्रयोक्ताओं द्धारा सुझाए गए पहलुओं पर सुधार करने में समर्थ बनाया है। विमानपत्तनों पर हमारे 'व्यवसाय उत्तर पत्र' के लिए रिसेप्टुकल लोकप्रिय हुए हैं; इन प्रत्युत्तरों ने हमें विमानपत्तनों के प्रयोक्ताओं की बदलती महत्वाकांक्षाओं को समझने में समर्थ बनाया है। सहस्राब्दि के पहले वर्ष के दौरान, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण अपने प्रचालन को अधिक पारदर्शी बनाने तथा अधुनातन सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके ग्राहकों को तत्काल सूचना उपलब्ध कराने के लिए प्रयास कर रहा है।

विशिष्ट प्रशिक्षण, कर्मचारी प्रत्युत्तर में सुधार तथा व्यावसायिक कौशल के उन्नयन पर फोकस स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के चार प्रशिक्षण स्थापनाओं अर्थात नागरिक विमानन प्रशिक्षण कॉलेज (सी ए टी सी), इलाहाबाद; राष्ट्रीय विमानन प्रबंधन एवं अनुसंधान संस्थान (एन आई ए एम ए आर), दिल्ली और दिल्ली एवं कोलकाता स्थित अग्नि प्रशिक्षण केंद्र (एफ टी सी) के बारे में ऐसी अपेक्षा है कि वे पहले से अधिक व्यस्त रहेंगे।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने सीएटीसी, प्रयागराज (इलाहाबाद) एवं हैदराबाद एयरपोर्ट पर प्रशिक्षण सुविधाओं को स्तरोन्नत करने की भी पहल की है। हाल ही में सीएटीसी पर एयरपोर्ट विजुअल सिमुलेटर (ए वी एस) उपलब्ध कराया गया है तथा सीएटीसी, इलाहाबाद एवं हैदराबाद एयरपोर्ट को गैर रडार प्रक्रियात्मक एटीसी सिमुलेटर उपकरण की आपूर्ति की जा रही है।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की एक समर्पित उड़ान निरीक्षण यूनिट (एफ आई यू) है तथा इसके बेड़े में तीन हवाई जहाज हैं जो निरीक्षण में समर्थ अधुनातन एवं पूर्णत: स्वचालित उड़ान निरीक्षण प्रणाली से सुसज्जित हैं।

1. कैट-3 तक आई एल एस

2. वी ओ आर (सी वी ओ आर / डी वी ओ आर)
3. डी एम ई
4. एन डी बी
5. वी जी एस आई (पी ए पी आई, वी ए एस आई)
6. रडार (ए एस आर / एम एस एस आर)

उड़ान अंभभोधन के लिए अपने यहां मौजूद नेविगेशन एड्स के अलावा, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण एयर फोर्स, नेवी, कोस्टव गार्ड एवं भारत में अन्य निजी हवाई क्षेत्रों के लिए नेविगेशन एड्स का उड़ान अंभभोधन भी करता है।

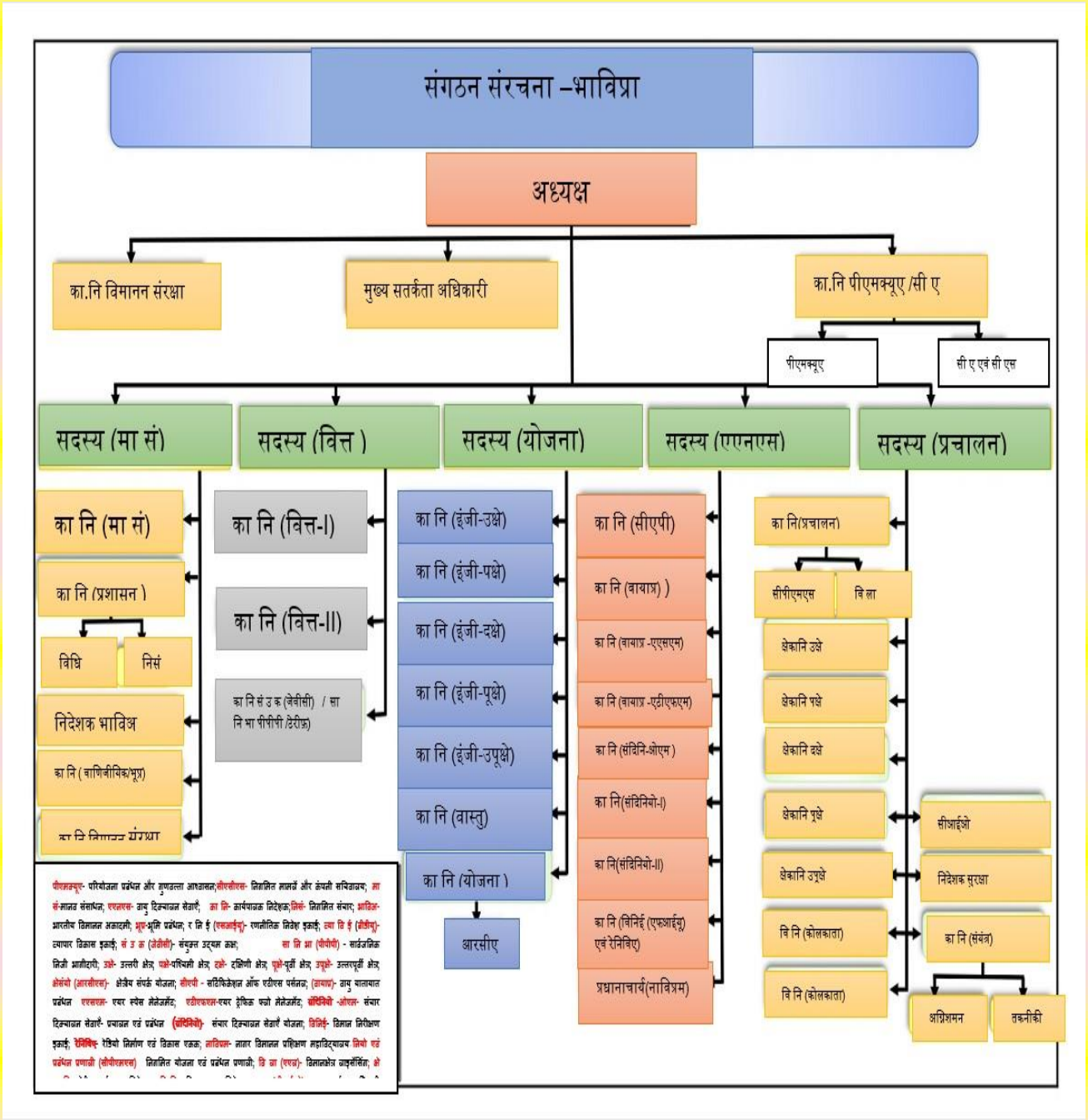

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज

एक परिचय

नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज की स्थापना सन 1948 में नागर विमानन महानिदेशालय, भारत सरकार द्वारा की गई थी, जो कि अब भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) का एक हिस्सा है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की स्थापना भारत सरकार, नागर विमानन मंत्रालय के अधीन संसद के एक अधिनियम के तहत सन 1994 में एक कार्पोरेट निकाय के रूप में हुई थी। नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज एयर नैविगेशन सर्विसेज के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान करने की दायित्व के साथ इस क्षेत्र में अग्रणी संस्थान है। सीएटीसी,अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन द्वारा प्रत्यायोजित वैश्विक मानकों एवं पद्धतियों के अनुसार एटीसी एवं सीएनएस कार्मिकों को दक्षता आधारित प्रशिक्षण प्रदान करता है। एटीसी एवं सीएनएस प्रशिक्षण दोनों ही संरक्षा की दृष्टि से अत्यधिक संवेदनशील हैं तथा इन्हें सरकारी नियामक नागर विमानन महानिदेशालय तथा अंतर्राष्ट्रीय नियामक अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन द्वारा विनियमित किया जाता है।

एटीम प्रशिक्षण आईसीएओ अनुलग्नक-1 में निर्धारित मानकों को पूरा करने पर निर्भर है तथा यह वायु यातायात को सुरक्षित एवं वायु यातायत के कुशल प्रवाह तथा प्रबंधन हेतु दक्षता से परिपूर्ण वायु यातायात नियंत्रक तैयार करती है। सीएनएस प्रशिक्षण की प्रकृति तकनीकी होती है तथा यह उच्च कौशल एवं गुणवत्तायुक्त विशेषज्ञ, वायु यातायात इलेक्ट्रानिक संरक्षा कार्मिक (ATSEPs) तैयार करती है ताकि एयर नैविगेशन सेवाओं के आधारभूत ढ़ाचों, एयर सेफ़्टी क्रिटिकल इक्वीपमेंट की कठोरतम आवश्यकताओं की पूर्ति हो। सीएटीसी, आईसीएओ ट्रेनएयर प्लस कार्यक्रम का एक पूर्ण सदस्य है जो हवाई नेविगेशन सेवाओं के क्षेत्र में प्रशिक्षण का एक विश्व स्तर पर मानकीकृत प्रारूप है। सीएटीसी आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित है।

नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
प्रयागराज
CIVIL AVIATION TRAINING COLLEGE
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
PRAYAGRAJ

नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
इलाहाबाद - 211012 (उ.प्र.) भारत
CIVIL AVIATION TRAINING COLLEGE
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
ALLAHABAD - 211012 (U.P.) INDIA
I CATC

राजभाषा क्या है ? – जाने सरल शब्दों में

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि विश्व के सभी देशों की अपनी-अपनी राजभाषा है। इसी तरह, भारत की भी अपनी राजभाषा है। राजभाषा का सरल शब्दों में अर्थ है राजकाज की भाषा अर्थात सरकारी कामकाज की भाषा। जिस भाषा में किसी देश के प्रशासन एवं जनहित से जुड़े सभी कार्य किए जाते हों, उस भाषा को राजभाषा कहते हैं। इस प्रकार, यह किसी देश या राज्य के शासन एवं प्रशासन की भाषा होती है।

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात हमारे देश को सुचारु रूप से चलाने के लिए हमारी अपनी राजभाषा की अति आवश्यकता थी। प्राचीन भारत की राजभाषा संस्कृत एवं पाली हुआ करती थी। मध्यकालीन भारत की राजभाषा अरबी, फारसी एवं उर्दू हुआ करती थी। ब्रिटिशकालीन भारत की राजभाषा अँग्रेजी थी। अतः स्वतंत्रता संग्राम के महान एवं अग्रणी नेताओं के नेतृत्व में संविधान निर्माण के लिए एक संविधान सभा गठित की गई थी। संविधान सभा के सामने सवाल यह था कि किस भाषा को भारत की राजभाषा बनाया जाए ?

उस वक्त भी हिन्दी पूरे देश में समझी जाने वाली भाषा के साथ-साथ आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली भाषा थी। हिन्दी की पहुँच पूरे देश भर में थी और यह शेष भारत के नागरिकों के लिए संपर्क भाषा का काम कर रही थी।

संविधान सभा में तीन दिन (12 से 14 सितंबर, 1949 तक) की लंबी बहस के बाद हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया। अतः दिनांक 14 सितंबर 1949 को हिन्दी संघ की राजभाषा बनी परिणामतः तथा इसके उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि ब्रिटिश शासनकाल के दौरान देश का सारा कामकाज अंग्रेज़ी भाषा में होता था। व्यावहारिक रूप से अचानक देश का सारा कामकाज हिन्दी में कर पाना आसान नहीं था। इसलिए भारत सरकार ने प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए संविधान के लागू होने की तिथि से 15 वर्षों तक हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेज़ी का प्रयोग जारी रखने का निर्णय लिया।

अतः 26 जनवरी, 1965 से सम्पूर्ण देश का सरकारी कामकाज केवल हिन्दी में किया जाना तय था लेकिन सन 1965 की तय समय सीमा के पूरे होने से पहले ही देश के विभिन्न भागों में भाषायी विवाद शुरू हो गया। अतः सरकार ने हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेज़ी का प्रयोग इस मामले में सर्वसम्मति प्राप्त होने तक करने संबंधी बिल संसद में पारित किया जिसे राजभाषा अधिनयम, 1963 के नाम से जाना गया। संक्षेप में कहें तो संघ की राजभाषा नीति द्विभाषिक है। जिसमें हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेज़ी का प्रयोग चलता रहेगा लेकिन हिन्दी को प्राथमिकता देना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है।

राजभाषा, राष्ट्रभाषा और मातृभाषा में अंतर क्या है ?

1. राजभाषा (Official Language)

- यह वह भाषा होती है जिसका प्रयोग सरकार **शासन और प्रशासनिक कामकाज** के लिए करती है।
- **भारत में:** हिंदी (देवनागरी लिपि में) राजभाषा है और अंग्रेज़ी सह-राजभाषा है।
- मतलब: सरकारी कामकाज हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों में हो सकता है।

---

2. राष्ट्रभाषा (National Language)

- राष्ट्रभाषा वह भाषा होती है जिसे पूरा राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान के प्रतीक के रूप में मान्यता देता है।

- भारत में संविधान ने किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा घोषित नहीं किया है।
- हालांकि व्यवहार में हिंदी को कई बार "राष्ट्रभाषा" कहा जाता है, पर यह केवल एक लोक-मान्यता है, संवैधानिक नहीं।

---

3. मातृभाषा (Mother Tongue)

- यह वह भाषा होती है जो व्यक्ति जन्म से अपने परिवार और परिवेश से सीखता है।
- हर व्यक्ति की मातृभाषा अलग हो सकती है—जैसे किसी की पंजाबी, किसी की तमिल, किसी की बंगाली या किसी की हिंदी।
- मातृभाषा का संबंध व्यक्ति की संस्कृति और घर-परिवार से होता है।

☞ **संक्षेप में:**

- **राजभाषा** – वह भाषा जिसे सरकार आधिकारिक कार्यों में प्रयोग करती है। भारत में राजभाषा हिन्दी (देवनागरी लिपि) है, अंग्रेज़ी सहायक भाषा है।
- **राष्ट्रभाषा** – वह भाषा जो पूरे राष्ट्र की एकता और पहचान का प्रतीक मानी जाती है। भारत में किसी भाषा को राष्ट्रभाषा घोषित नहीं किया गया है।
- **मातृभाषा** – वह भाषा जो व्यक्ति जन्म से अपने घर-परिवार और परिवेश से सीखता है।

राजभाषा वह भाषा होती है जिसे किसी देश की सरकार अपने शासन-प्रशासन, विधायन (कानून बनाने), न्यायालय, तथा सरकारी कामकाज में प्रयोग के लिए निर्धारित करती है।

भारत के संदर्भ में:

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, **भारत की राजभाषा "हिन्दी" (देवनागरी लिपि में)** है।
- साथ ही अंकों के लिए **अंतर्राष्ट्रीय रूप (१,२,३...)** का प्रयोग किया जाता है।
- अंग्रेज़ी भाषा को भी संविधान द्वारा एक **सहायक भाषा** के रूप में स्वीकार किया गया है, ताकि गैर-हिंदी भाषी राज्यों और केंद्र के बीच संचार सुगमता से हो सके।

☞ सरल शब्दों में:
राजभाषा वह भाषा है जो शासन के आधिकारिक कार्यों और प्रशासन में प्रयोग की जाती है।

प्रश्न 1 - राजभाषा अधिनियम किस वर्ष बना?

(क) 15 जनवरी, 1963

(ख) 10 अप्रैल, 1965

(ग) 10 मई, 1963

(घ) 13 जून, 1964

प्रश्न 2- केन्द्रीय हिन्दी समिति के उपाध्यक्ष कौन होते हैं?

(क) रक्षा मंत्री

(ख) गृह मंत्री

(ग) प्रधान मंत्री

(घ) विदेश मंत्री

प्रश्न 3- केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं?

(क) रक्षा मंत्री

(ख) गृह मंत्री

(ग) प्रधान मंत्रि

(घ) राजभाषा विभाग (गृहमंत्रालय) के सचिव

प्रश्न 4 - प्रत्येक वर्ष 'हिंदी दिवस' किस तिथि को मनाया जाता है?

(क) 02, अक्टूबर

(ख) 22, मई

(ग) 14, सितम्बर

(घ) 30, जनवरी

प्रश्न 5 - राजभाषा नियम 1976 अन्तिम बार कब संशोधित हुआ?

(क) वर्ष 1987 में

(ख) वर्ष 2014 में

(ग) वर्ष 2011 में

(घ) वर्ष 2007 में

प्रश्न 6 - संविधान की अष्टम अनुसूची में कितनी भाषाएं शामिल हैं?

(क) 18

(ख) 20

(ग) 24

(घ) 22

प्रश्न 7- कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं?

(क) महाप्रबंधक

(ख) कार्यालय अध्यक्ष

(ग) राजभाषा अधिकारी

(घ) उप महाप्रबंधक

प्रश्न 8 - राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक कब-कब होती है?

(क) माह में एक बार

(ख) दो माह में एक बार

(ग) तीन माह में एक बार

(घ) छः माह में एक बार

प्रश्न 9- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक कब-कब होती है?

(क) माह में एक बार

(ख) दो माह में एक बार

(ग) तीन माह में एक बार

(घ) छः माह में एक बार

प्रश्न 10- हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश किस अनुच्छेद में दिए हैं?

(क) 343

(ख) 349

(ग) 351

(घ) 346

प्रश्न 11 - संसदीय राजभाषा समिति की किस उप-समिति के क्षेत्र में गृह मंत्रालय आता है?

(क) पहली उप-समिति

(ख) दूसरी उप-समिति

(ग) तीसरी उप-समिति

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 12- राजभाषा अधिनियम 1963 की किस धारा के उपबन्धों के अनुसार संसदीय समिति का गठन किया गया?

(क) धारा - 5

(ख) धारा 3

(ग) धारा 3(3)

(घ) धारा - 4

प्रश्न 13 - विधान मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा का उल्लेख संविधान के किस अनुच्छेद में है?

(क) 120 में

(ख) 343 में

(ग) 210 में

(घ) 351 में

प्रश्न 14 - संविधान के भाग-17 में संघ की भाषा से संबंधित अनुच्छेद 343 किस अध्याय से है?

(क) अध्याय- 1

(ख) अध्याय - 3

(ग) अध्याय- 2

(घ) अध्याय- 4

प्रश्न 15 - संविधान के भाग-17 में संघ की भाषा से संबंधित अध्याय-2 में कितने अनुच्छेदों का उल्लेख है?

(क) 05

(ख) 08

(ग) 04

(घ) 03

उत्तर - (घ) 03

प्रश्न 16 - संघ की भाषा से संबंधित 'विशेष निदेश' संविधान के भाग-17 के किस अध्याय में है?

(क) अध्याय- 2

(ख) अध्याय- 4

(ग) अध्याय- 1

(घ) अध्याय- 3

उत्तर - **(ख) अध्याय- 4**

प्रश्न 17- एक राज्य से दूसरे राज्य या किसी राज्य और संघ के बीच प्रयोग की जाने वाली भाषा का उल्लेख किस अनुच्छेद में है?

(क) अनुच्छेद - 343

(ख) अनुच्छेद - 344

(ग) अनुच्छेद - 345

(घ) अनुच्छेद - 346

प्रश्न 18 - राजभाषा हिंदी से संबंधित नियमित पाठ्यक्रम की परीक्षाएं वर्ष में कितनी बार आयोजित की जाती हैं?

(क) 1 बार

(ख) 3 बार

(ग) 2 बार

(घ) 4 बार

प्रश्न 19 - संसदीय समिति ने अपनी प्रथम बैठक के बाद, राष्ट्रपति के समक्ष अपनी रिपोर्ट कब प्रस्तुत की?

(क) 30.09.1967 को

(ख) 08.02.1959 को

(ग) 10.05.1963 को

(घ) 02.10.1968 को

प्रश्न 20 - इनमें से 'ग' क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले संघ शासित राज्य कौन सा है, जिसे वर्ष 2019 में शामिल किया गया है?

(क) पांडिचेरी

(ख) लक्षद्वीप

(ग) गोवा

(घ) जम्मू-कश्मीर

प्रश्न 21 - किन राज्यों में उर्दू को द्वितीय राजभाषा के रूप में घोषित किया गया है?

(क) उत्तर प्रदेश व केरल

(ख) तमिलनाडु व महाराष्ट्र

(ग) कश्मीर व लद्दाख

(घ) आन्ध्र प्रदेश व बिहार

प्रश्न 22 - हिंदी सलाहकार समिति किस मंत्रालय में गठित की जाती है?

(क) सभी मंत्रालयों में

(ख) गृह मंत्रालय में

(ग) शिक्षा मंत्रालय में

(घ) वित्त मंत्रालय में

प्रश्न 23 - केन्द्रीय हिंदी समिति में कुल कितने सदस्य हैं?

(क) कुल 41 सदस्य

(ख) कुल 65 सदस्य

(ग) कुल 45 सदस्य

(घ) कुल 56 सदस्य

प्रश्न 24 - डोंगरी भाषा किस राज्य में बोली जाती है?

(क) असम

(ख) जम्मू कश्मीर

(ग) बिहार

(घ) महाराष्ट्र

प्रश्न 25 - यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में 80 प्रतिशत कर्मचारी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं तो उस कार्यालय को किस नियम के तहत राजपत्र में अधिसूचित किया जाता है?

(क) नियम 10 (2) में

(ख) नियम 10 (3) में

(ग) नियम 10 (1) में

(घ) नियम 10 (4) में

प्रश्न 26 - केन्द्रीय अनुवाद व्यूरो का गठन कब किया गया था?

(क) 01.07.1971 में

(ख) 01.03.1971 में

(ग) 01.01.1971 में

(घ) 01.10.1971 में

प्रश्न 27 - सभी नाम पट्ट/सूचना पट्ट, पत्र शीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख एवं लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में ही हो, इसका उल्लेख किस नियम में है?

(क) नियम 10 (1) में

(ख) नियम 10 (2) में

(ग) नियम 11 (1) में

(घ) नियम 11 (3) में

प्रश्न 28 - केन्द्र सरकार द्वारा हिंदी के विकास के लिए राजभाषा नियम कब बनाया गया?

(क) 17.07.1974 में

(ख) 28.07.1975 में

(ग) 17.07.1976 में

(घ) 28.06.1976 में

प्रश्न 29 - कर्मचारी कोई आवेदन अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है, यह किस नियम के अन्तर्गत आता है?

(क) नियम 7 (1) में

(ख) नियम 7 (2) में

(ग) नियम 11 (1) में

(घ) नियम 10 (1) में

उत्तर - **(क) नियम 7 (1) में**

प्रश्न 30 - इनमें से कौन सी भाषा देवनागरी लिपि में नहीं लिखी जाती है?

(क) हिंदी

(ख) संस्कृत

(ग) गुजराती

(घ) मराठी

प्रश्न 31 - संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव किसने प्रस्तुत किया था?

(क) महात्मा गांधी ने

(ख) गोपाल स्वामी आयंगर ने

(ग) सी. राजगोपालाचारी ने

(घ) जुगुल किशोर शुक्ल ने

प्रश्न 32 - निम्न में से यह अधिकार किसको है कि वह हिंदी अथवा किसी अन्य भाषा को उच्च न्यायालय की कार्यवाही की भाषा का दर्जा दे सके?

(क) संसद का कोई भी सदन

(ख) उस राज्य का राज्यपाल

(ग) राज्यपाल ऐसा कर सकता है बशर्ते उसे पहले राष्ट्रपति पूर्व अनुमति लेनी होगी

(घ) उच्चतम न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश

प्रश्न 33 - वर्ष 1976 में गठित संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष कौन थे?

(क) अटल बिहारी वाजपेयी

(ख) ओम मेहता

(ग) ललित नारायण मिश्र

(घ) हुकुम देव नारायण सिंह

प्रश्न 34 - नियमित हिंदी भाषा पाठ्यक्रमों का सत्र किस-किस महीने में आरंभ होता है?

(क) जनवरी और जुलाई में

(ख) मार्च अगस्त में

(ग) फरवरी और जून में

(घ) अप्रैल और दिसम्बर में

प्रश्न 35 - राजभाषा नियम 1976 किस राज्य पर लागू नहीं होता है?

(क) आंध्र प्रदेश

(ख) तमिलनाडु

(ग) जम्मू-कश्मीर

(घ) केरल

प्रश्न 36 - भारतीय संविधान के कुल कितने भागों में भाषा संबंधी प्रावधान है?

(क) दो

(ख) चार

(ग) तीन

(घ) पांच

प्रश्न 37 - भारतीय संविधान के कुल कितने अनुच्छेदों में भाषा संबंधी प्रावधान है?

(क) नौ

(ख) दस

(ग) ग्यारह

(घ) बारह

प्रश्न 38 - भारतीय संविधान के किन-किन अनुच्छेदों में भाषा संबंधी प्रावधान है?

(क) 110, 220, 343 से 351

(ख) 120, 210, 343 से 350

(ग) 120, 210, 343 से 351

(घ) 110, 220, 343 से 350

प्रश्न 39 - संसद में सदस्य अपनी अभिव्यक्ति किस भाषा में दे सकते हैं?

(क) हिंदी में

(ख) अंग्रेजी में

(ग) अध्यक्ष की अनुमति से अपनी मातृभाषा में

(घ) अध्यक्ष की अनुमति के बिना किसी भी भाषा में

प्रश्न 40- संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप क्या होगा?

(क) 1, 2, 3, 4

(ख) एक, दो, तीन, चार

(ग) I, II, III, IV

(घ) १, २, ३, ४

प्रश्न 41 - राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेज किस भाषा में जारी किए जाएंगे?

(क) केवल हिंदी में

(ख) केवल अंग्रेजी में

(ग) हिंदी और अंग्रेजी दोनों में

(घ) किसी भी भाषा में

प्रश्न 42 - हिन्दी में प्रवीणताप्राप्त कर्मचारी किसे कहा जाता है?

(क) प्राइमरी स्तर पर हिंदी का ज्ञान

(ख) प्राइमरी स्तर की परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण

(ग) मैट्रिक स्तर पर हिंदी का ज्ञान

(घ) मैट्रिक स्तर की परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण

प्रश्न 43 - हिन्दी में कार्यसाधक कर्मचारी किसे कहा जाता है?

(क) प्राइमरी स्तर पर हिंदी का ज्ञान

(ख) प्राइमरी स्तर की परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण

(ग) मैट्रिक स्तर की परीक्षा हिंदी एक विषय से उत्तीर्ण

(घ) मैट्रिक स्तर की परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण

प्रश्न 44 - राजभाषा नियम के अनुसार, अंदमान व निकोबार द्वीप किस क्षेत्र में आता है?

(क) क क्षेत्र

(ख) ख क्षेत्र

(ग) ग क्षेत्र

(घ) घ क्षेत्र

प्रश्न 45- राजभाषा नियम के अनुसार, इनमें से कौन सा राज्य 'क' क्षेत्र में नहीं आता है?

(क) राजस्थान

(ख) गुजरात

(ग) हिमाचल प्रदेश

(घ) छत्तीसगढ़

प्रश्न 46 - राजभाषा नियमों के अनुसार लक्षद्वीप को किस क्षेत्र में रखा गया है?

(क) क क्षेत्र

(ख) ख क्षेत्र

(ग) ग क्षेत्र

(घ) घ क्षेत्र

प्रश्न 47 - आठवीं अनुसूची में कौन सी भाषा शामिल नहीं है?

(क) उर्दू भाषा

(ख) सिन्धी भाषा

(ग) ब्रज भाषा

(घ) कोंकणी भाषा

प्रश्न 48 - संविधान सभा ने किस वर्ष हिंदी को स्वतंत्र भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया?

(क) 26 जनवरी, 1950

(ख) 15 अगस्त, 1947

(ग) 09 अगस्त, 1942

(घ) 14 सितंबर, 1949

प्रश्न 49 - राजभाषा अधिनियम, 1963 का संशोधन किस वर्ष में हुआ?

(क) 1967

(ख) 1964

(ग) 1965

(घ) 1966

प्रश्न 50 - प्रथम राजभाषा आयोग का गठन किस वर्ष हुआ?

(क) 05 मई, 1954

(ख) 07 जून, 1955

(ग) 30 अप्रैल, 1956

(घ) 08 अगस्त, 1957

प्रश्न 51 - राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

(क) बालकृष्ण गोखले,

(ख) गोपालकृष्ण रानडे,

(ग) बालासाहेब गंगाधर खेर,

(घ) बाल गंगाधर तिलक

प्रश्न 52 - संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं?

(क) केन्द्रीय वित्त मंत्री

(ख) केन्द्रीय कृषि मंत्री

(ग) केन्द्रीय रेल मंत्री

(घ) केन्द्रीय गृह मंत्री

प्रश्न 53 - संसदीय राजभाषा समिति में कुल कितने सदस्य होते हैं?

(क) 30

(ख) 28

(ग) 25

(घ) 20

प्रश्न 54 - संसदीय राजभाषा समिति में लोकसभा के कितने सदस्य होते हैं?

(क) 18

(ख) 20

(ग) 22

(घ) 15

प्रश्न 55 - संसदीय राजभाषा समिति में राज्यसभा के कितने सदस्य होते हैं?

(क) 07

(ख) 09

(ग) 10

(घ) 12

प्रश्न 56 - संसदीय राजभाषा समिति की कितनी उप समितियां हैं?

(क) 01 उप समिति

(ख) 02 उप समितियां

(ग) 03 उप समितियां

(घ) 04 उप समितियां

प्रश्न 57 - राजभाषा नियम 1976 में प्रथम संशोधन किस वर्ष किया गया?

(क) 1987

(ख) 1988

(ग) 1989

(घ) 1990

प्रश्न 58 - राजभाषा अधिनियम, 1963 की कुल कितनी धाराएं हैं?

(क) 08

(ख) 09

(ग) 10

(घ) 11

प्रश्न 59 - संविधान के अनुच्छेद 120 में किस संस्था के भाषा के उपयोग के संबंध में उपबन्ध हैं?

(क) विधान मंडल

(ख) विधान सभा

(ग) संसद

(घ) उच्चतम न्यायालय

प्रश्न 60 - राजभाषा नियम 1976 को अब तक कितनी बार संशोधित किया गया है?

(क) 5 बार

(ख) 1 बार

(ग) 2 बार

(घ) 3 बार

प्रश्न 61 - केन्द्रीय हिंदी समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं?

(क) वित्त मंत्री

(ख) गृह मंत्री

(ग) प्रधान मंत्री

(घ) रेल मंत्री

प्रश्न 62 - संसदीय राजभाषा समिति की पहली बैठक कब हुई?

(क) 14 सितम्बर, 1955 को

(ख) 30 अक्तूबर, 1956 को

(ग) 16 नवम्बर, 1957 को

(घ) 30 जनवरी, 1958 को

प्रश्न 63 - राजभाषा के संबंध में संसदीय समिति की राय पर राष्ट्रपति ने प्रथम आदेश किस वर्ष जारी किए?

(क) 1959

(ख) 1960

(ग) 1961

(घ) 1962

प्रश्न 64 - राजभाषा के संबंध में राष्ट्रपति के आदेश को कार्यान्वित करने के लिए संसद के दोनों सदनों द्वारा राजभाषा संकल्प किस वर्ष पारित किया गया?

(क) 18 जनवरी, 1968

(ख) 30 जनवरी, 1968

(ग) 02 फरवरी, 1962

(घ) 10 मई, 1962

प्रश्न 65 -1957 में गठित प्रथम राजभाषा संसदीय समिति के अध्यक्ष कौन थे?

(क) पंडित गोविंद वल्लभ पंत

(ख) दत्ता वामन पोतदार

(ग) मोरारजी भाई देसाई

(घ) पंडित मदन मोहन मालवीय

प्रश्न 66 - राजभाषा हिंदी के प्रयोग की दृष्टि से भारत संघ को कितने वर्गों में रखा गया है?

(क) 2

(ख) 3

(ग) 4

(घ) 5

प्रश्न 67 - राजभाषा अधिनियम की कौन सी धारा संसदीय समिति के गठन से संबंधित है?

(क) धारा-3

(ख) धारा-4

(ग) धारा-5

(घ) धारा-6

प्रश्न 68 - राजभाषा नियम, 1976 में कब-कब संशोधन किया गया है?

(क) वर्ष 1984 एवं 2009 में

(ख) वर्ष 1985 एवं 2010 में

(ग) वर्ष 1986 एवं 2011 में

(घ) वर्ष 1987, 2007 एवं 2011 में

प्रश्न 69 - राजभाषा विभाग का गठन कब हुआ?

(क) अप्रैल, 1975 में

(ख) मई, 1975 में

(ग) जून, 1975 में

(घ) जुलाई, 1975 में

प्रश्न 70 - केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए भाषा प्रशिक्षण हेतु कितने पाठ्यक्रम निर्धारित है?

(क) दो

(ख) तीन

(ग) चार

(घ) पांच

प्रश्न 71 - राजभाषा हिंदी प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम कौन तैयार करता है?

(क) गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग

(ख) वित्त मंत्रालय

(ग) रक्षा मंत्रालय

(घ) रेल मंत्रालय

प्रश्न 72 - हिंदीतर भाषी राज्यों में नाम बोर्ड, पदनाम बोर्ड एवं सूचना बोर्ड को नियमानुसार किस क्रम में प्रदर्शित किया जाना अपेक्षित है?

(क) हिंदी भाषा, अंग्रेजी भाषा, क्षेत्रीय भाषा

(ख) क्षेत्रीय भाषा, हिंदी भाषा, अंग्रेजी भाषा

(ग) क्षेत्रीय भाषा, अंग्रेजी भाषा, हिंदी भाषा

(घ) अंग्रेजी भाषा, क्षेत्रीय भाषा, हिंदी भाषा

प्रश्न 73 - राजभाषा नियमों के अनुपालन का उत्तरदायित्व राजभाषा नियम, 1976 के किस नियम में उल्लिखित है?

(क) नियम - 9

(ख) नियम-10

(ग) नियम-11

(घ) नियम-12

प्रश्न 74 - हिंदी पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में देने के लिए राजभाषा नियम, 1976 के किस उप-नियम में निर्देश दिए गए है?

(क) नियम-05 में

(ख) नियम-06 में

(ग) नियम-07 में

(घ) नियम-08 में

प्रश्न 75 - राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अनुपालन की जिम्मेदारी किसकी है?

(क) मुख्य कार्यालय अधीक्षक

(ख) मुख्य टंकक

(ग) संबंधित डीलर

(घ) इस आशय के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की

प्रश्न 76 - हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों को कितने प्रतिशत कार्य हिंदी में करने के लिए कार्यालय प्रमुख द्वारा व्यक्तिशः आदेश जारी किए जा सकते हैं?

(क) 75%

(ख) 80%

(ग) 90%

(घ) 100%

प्रश्न 77 - केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के मध्य किन भाषाओं का प्रयोग अपेक्षित है?

(क) मराठी और हिंदी

(ख) मराठी और अंग्रेजी

(ग) केवल हिंदी

(घ) हिंदी और अंग्रेजी

प्रश्न 78 - राजभाषा का वार्षिक कार्यक्रम किस मंत्रालय द्वारा जारी किया जाता है?

(क) रेल मंत्रालय

(ख) वित्त मंत्रालय

(ग) गृह मंत्रालय

(घ) रक्षा मंत्रालय

प्रश्न 79 - किस प्रदेश की राजभाषा अंग्रेजी है?

(क) नागालैंड

(ख) असम

(ग) त्रिपुरा

(घ) हिमाचल प्रदेश

प्रश्न 80 - संसदीय राजभाषा समिति अपनी रिपोर्ट किसे प्रस्तुत करती हैं?

(क) प्रधान मंत्री

(ख) गृह मंत्री

(ग) महामहिम राष्ट्रपति

(घ) रक्षा मंत्री

प्रश्न 81 - राजभाषा नियम के अनुसार अंड़मान-निकोबार द्वीप समूह किस क्षेत्र में स्थित है?

(क) क क्षेत्र में

(ख) ख क्षेत्र में

(ग) ग क्षेत्र में

(घ) घ क्षेत्र में

प्रश्न 82 - भारत संघ की राजभाषा क्या है?

(क) ब्राह्मी लिपि में हिंदी

(ख) सिंधी लिपि में हिंदी

(ग) देवनागरी लिपि में हिंदी

(घ) नागरी लिपि में हिंदी

प्रश्न 83 - संसद में संविधान का भाग-17 कब पारित हुआ?

(क) 16.09.1950

(ख) 15.09.1947

(ग) 14.08.1949

(घ) 14.09.1949

प्रश्न 84 - राजभाषा अधिनियम 1963 कब संशोधित हुआ?

(क) 1976

(ख) 1970

(ग) 1973

(घ) 1967

प्रश्न 85 - अरुणाचल प्रदेश की राजभाषा क्या है?

(क) डोगरी

(ख) नेपाली

(ग) हिंदी

(घ) अंग्रेजी

प्रश्न 86 - राजभाषा नीति की जानकारी देने वाले अनुच्छेद 343-351 संविधान के किस भाग में है?

(क) 11 वें

(ख) 15 वें

(ग) 17 वें

(घ) 10 वें

प्रश्न 87 - राजभाषा अधिनियम 1963 क्यों पारित किया गया?

(क) 1965 के बाद भी हिंदी के साथ प्रादेशिक भाषा के प्रयोग जारी रखने हेतु।

(ख) 1965 के बाद भी हिंदी के साथ क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग जारी रखने हेतु।

(ग) 1965 के बाद भी हिंदी के साथ अंग्रेजी भाषा के प्रयोग जारी रखने हेतु।

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

प्रश्न 88 - राजभाषा नियम किस वर्ष पारित हुआ?

(क) 1963

(ख) 1970

(ग) 1967

(घ) 1976

प्रश्न 89 - संविधान के 17वें भाग में कितने अनुच्छेद हैं?

(क) 12

(ख) 09

(ग) 11

(घ) 07

प्रश्न 90- दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र राजभाषा प्रयोग के दृटिकोण से किस क्षेत्र में है?

(क) क

(ख) ग

(ग) ख

(घ) घ

उत्तर - (ग) ख

प्रश्न 137 - केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के लिए प्रारम्भिक पाठ्यक्रम कौन सा है?

(क) प्रवीण

(ख) प्रबोध

(ग) प्राज्ञ

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर - (ख) प्रबोध

प्रश्न 140 - प्रमुख नगरों में गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं?

(क) महाप्रबंधक

(ख) जिला मजिस्ट्रेट

(ग) नगर में स्थित केन्द्रीय सरकार का वरिष्ठतम अधिकारी

(घ) नगर प्रमुख

उत्तर - (ग) नगर में स्थित केन्द्रीय सरकार का वरिष्ठतम अधिकारी

प्रश्न 141 - केन्द्र सरकार के हिंदी पाठ्यक्रमों की शिक्षा प्रणाली क्या है?

(क) नियमित

(ख) प्राईवेट

(ग) पत्राचार

(घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 143 - अष्टम अनुसूची में शामिल विदेशी भाषा कौन सी है?

(क) संथाली

(ख) अंग्रेजी

(ग) डोगरी

(घ) नेपाली

प्रश्न 144 - केन्द्र सरकार का कौन-सा मंत्रालय हिंदी संबंधी परीक्षाएं आयोजित करता है?

(क) विदेश मंत्रालय

(ख) शिक्षा मंत्रालय

(ग) गृह मंत्रालय

(घ) रेल मंत्रालय

प्रश्न 147 - राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए गठित समिति के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

(क) बी. जी. खेर

(ख) जी. बी. पंत

(ग) जे. एन. नेहरू

(घ) मौलाना आज़ाद

प्रश्न 148 - संविधान के अनुसार सांविधिक नियमों, विनियमों और आदेशों का अनुवाद कौन करता है?

(क) गृह मंत्रालय

(ख) रेलवे बोर्ड

(ग) रेल मंत्रालय

(घ) विधि मंत्रालय

प्रश्न 149 - संसदीय समिति का पुनर्गठन कब हुआ?

(क) 1963

(ख) 1976

(ग) 1949

(घ) 1967

उत्तर - (ख) 1976

प्रश्न 150 - आरंभिक तौर से संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाएं शामिल थीं?

(क) 19

(ख) 22

(ग) 14

(घ) 18

प्रश्न 151- आठवीं अनुसूची में सम्मिलित 'सिंधी' भाषा को किस वर्ष शामिल किया गया?

(क) 1949

(ख) 1970

(ग) 1950

(घ) 1967

प्रश्न 152 - कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली भाषाओं को आठवीं अनुसूची में किस वर्ष सम्मिलित किया गया?

(क) 1967

(ख) 1976

(ग) 1992

(घ) 2004

प्रश्न 153 - बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली भाषाओं को 8वीं अनुसूची में कब सम्मिलित किया गया?

(क) 2004

(ख) 1992

(ग) 1967

(घ) 1963

प्रश्न 154 - संविधान की 8वीं अनुसूची में बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली भाषाओं को संविधान के किस संशोधन द्वारा शामिल किया गया?

(क) 71वें

(ख) 92वें

(ग) 100वें

(घ) 65वें

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)

सदस्य कार्यालयों के वर्तमान कार्यालयाध्यक्षों एवं राजभाषा अधिकारी/नामित राजभाषा अधिकारियों की सूची

क्रम	सदस्य कार्यालय का नाम	कार्यालय अध्यक्ष का नाम एवं पदनाम	राजभाषा अधिकारी नाम एवं पदनाम
1	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, प्रयागराज	श्री वेंकटेश्वर एल. कार्यपालक निदेशक/प्रधानाचार्य एवं अध्यक्ष, नराकास, प्रयागराज (उपक्रम)	श्री ओम प्रकाश खरवार , सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य-सचिव, नराकास
2	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, प्रयागराज एयरपोर्ट, प्रयागराज	श्री मुकेश चन्द्र उपाध्याय विमानपत्तन निदेशक	श्री अमरेन्द्र कुमार चौधरी, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री श्याम कार्तिक सिंह वरिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा)
3	भारत पैट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड	श्री तुषार पायमोडे, प्रादेशिक प्रबंधक	श्री सौरभ परिहार, कार्यपालक
4	स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड	श्री रूपक अग्रवाल सहायक महाप्रबंधक (विक्रय)	श्री प्रमोद मानिकपुरी, वरिष्ठ प्रबन्धक
5	इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड, बरौनी-कानपुर पाइपलाइन	श्री शेष नारायण महाप्रबंधक	श्री शैलेश कुमार सिंह वरिष्ठ प्रचालन एवं अनुरक्षण अभियंता
6	इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड, बाटलिंग प्लांट	श्री राजेश जौहरी उप महाप्रबन्धक (संयंत्र)	श्री आलोक कुमार सिंह सहायक प्रबंधक (संयंत्र)
7	इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड (मण्डल कार्यालय)	श्री नन्दप्रीत सिंह, खुदरा बिक्री प्रमुख	-------
8	नैनी एरोस्पेस लिमिटेड	श्री संजय कुमार धूपड़ मुख्य कार्यपालक अधिकारी	श्री संजीव कुमार सिंह वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.)
9	आईटीआई लिमिटेड	श्री जे एस हिगिन्स, इकाई प्रमुख	श्रीमती पूनम सिन्हा, राजभाषा अधिकारी
10	पावरग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड	श्री पीयूष कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक	श्री अखण्ड प्रताप सिंह, उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

11	राष्ट्रीय लघु उद्योग लिमिटेड	श्री जर्नादन प्रसाद सिंह,वरिष्ठ शाखा प्रबंधक	श्री मिन्हाज अलीम, विकास अधिकारी
12	भारतीय खाद्य निगम	श्री बजरंग लाल अग्रवाल मण्डल प्रबंधक	श्री ज्ञान प्रकाश, प्रबंधक (हिन्दी)
13	भारतीय जीवन बीमा निगम लि .मंडलीय कार्यालय	श्री अनिल कुमार वरिष्ठ मण्डल प्रबंधक	श्री देव मणि यादव प्रशासनिक अधिकारी
14	दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड	श्री शोभित सोनकर सहायक प्रबंधक	श्री शोभित सोनकर सहायक प्रबंधक
15	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड मंडलीय कार्यालय – II	डॉ. नीरज कुमार ठाकुर वरिष्ठ व्यवसाय प्रबंधक	श्री दिब्यांश साहू, सहायक
16	नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड	श्री जितेंद्र कुमार, व्यवसाय प्रबंधक	श्री जितेंद्र कुमार, व्यवसाय प्रबंधक
17	डेडिकेटेड फ्रेट कोरिडोर ऑफ इंडिया लिमिटेड	श्री आनंद भूषण सरन मुख्य महाप्रबंधक	श्री अभिषेक यादव परियोजना प्रबंधक/मानव संसाधन
18	रेलटेल कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, प्रयागराज	श्री प्रशांत मिश्र , क्षेत्रीय प्रबंधक	श्री सुशील कुमार निजी सचिव
19	भारत संचार निगम लिमिटेड	श्री बृजेन्द्र कुमार सिंह, महाप्रबंधक	---
20	एनएमडीसी लिमिटेड सिलिका सैंड प्रोजेक्ट	श्री हेमंत कुमार, सहायक महाप्रबंधक	श्री हेमंत कुमार, सहायक महाप्रबंधक
21	यूनाइटेड इंडिया इन्शुरेंस कंपनी लिमिटेड	श्री राजीव गोयल, प्रबंधक	श्री राजीव गोयल, प्रबंधक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (उपक्रम)

अध्यक्ष कार्यालय

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, प्रयागराज

द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों के कुछ फोटोग्राफ़्स

सम्मेलन कक्ष

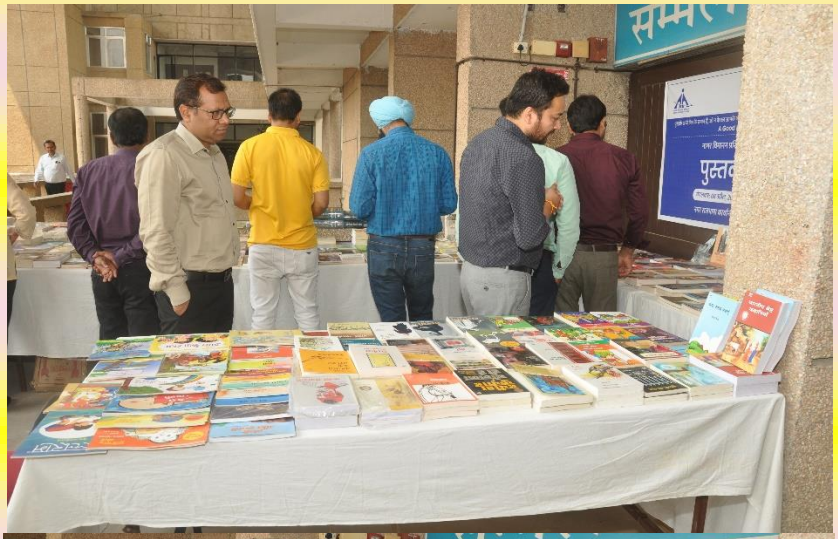

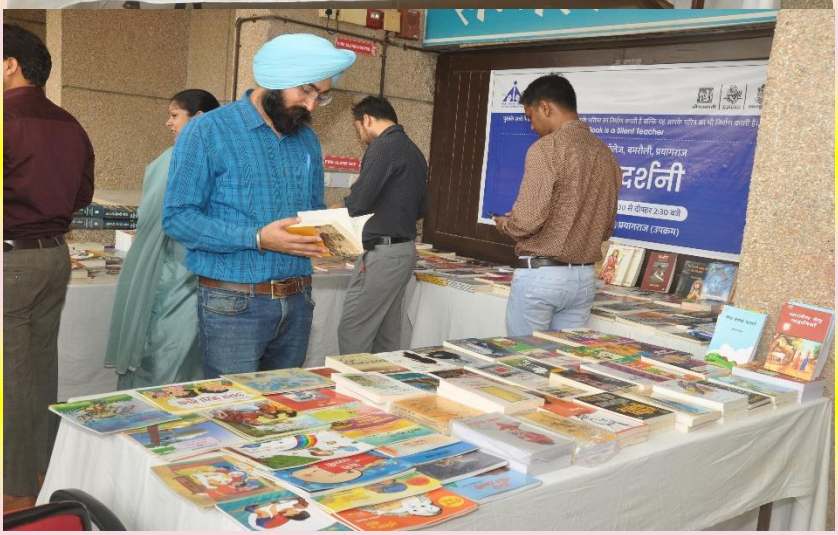
दर्शनी

विभाग
COLLEGE
श्री पुष्प राज सिंह
अपर आयुक्त

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, प्रयागराज
CIVIL AVIATION TRAINING COLLEGE
ALLAHABAD (INDIA)
ISO 9001:2008